वर्ष : ७

संत श्री आसारामजी आश्रम
द्वारा प्रकाशित

फरवरी : १९९७

6/-

ऋषि प्रसाद
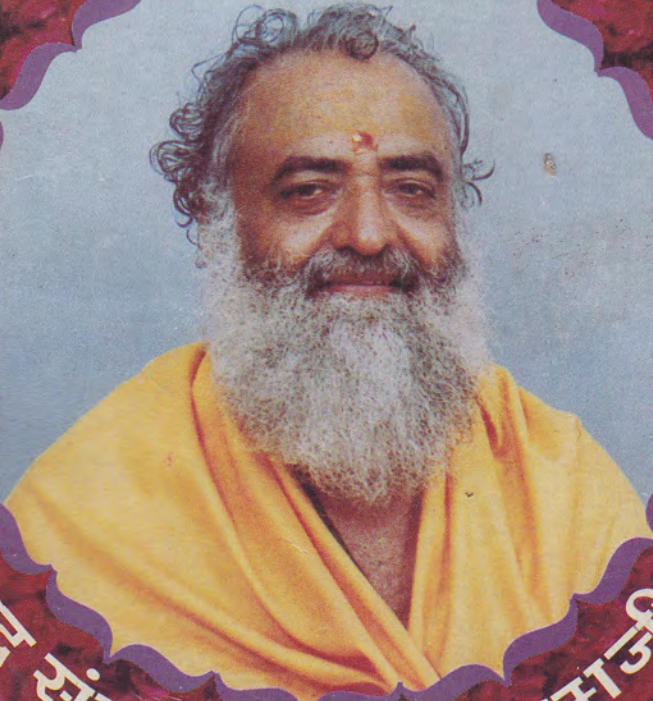
पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

50

सुवर्ण जयंती अंक

ऋषि प्रसाद

वर्ष : ७
अंक : ५०
९ फरवंरी १९९७

सम्पादक : क. रा. पटेल
प्रे. खो. मकवाणा

मूल्य : रू. ६-००

सदस्यता शुल्क

भारत, नेपाल व भूटान में
(१) वार्षिक : रू. ५०/-
(२) आजीवन : रू. ५००/-

विदेशों में
(१) वार्षिक : US $ 30
(२) आजीवन : US $ 300

कार्यालय
'ऋषि प्रसाद'
श्री योग वेदान्त सेवा समिति
संत श्री आसारामजी आश्रम
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५
फोन : (०७९) ७४८६३१०, ७४८६७०२.

प्रकाशक और मुद्रक : क. रा. पटेल
श्री योग वेदान्त सेवा समिति,
संत श्री आसारामजी आश्रम, मोटेरा,
साबरमती, अहमदाबाद-३८० ००५ ने
विनय प्रिन्टिंग प्रेस, मीठाखली, अहमदाबाद, पारिजात प्रिन्टरी, राणीप, अहमदाबाद में छपाकर प्रकाशित किया।

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

प्रस्तुत है...

'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों से निवेदन है कि कार्यालय के साथ पत्रव्यवहार करते समय अपना रसीद क्रमांक एवं स्थायी सदस्य क्रमांक अवश्य बतायें।

दिले दिलबर से तो मिला दे मुझे

हे दीनबन्धु करुणासागर ।
हरिनाम का जाम पिला दे मुझे ॥
धर रहमो नजर दाता मुझ पर ।
प्रभु प्रेम की प्यास जगा दे मुझे ॥

हम कौन हैं ? क्या हैं ? भान नहीं ।
क्या करना है ? अनुमान नहीं ॥
मदहोश हैं कोई होश नहीं ।
अब ज्ञान की राह दिखा दे मुझे ॥
हे दीनबन्धु०

है रजस ने पकड़ा जोर यहाँ ।
छाया तम अहं घनघोर यहाँ ॥
छुपे राग द्वेष सब चोर यहाँ ।
समता का दर दिखला दे मुझे ॥
हे दीनबन्धु०

चंचल चितवन वश में ही नहीं ।
छुपा काम क्रोध मद लोभ यहीं ॥
मन में भी समाया क्षोभ कहीं ।
गाफिल हूँ दाता जगा दे मुझे ॥
हे दीनबन्धु०

काया में माया का डेरा है ।
मोह ममता का भी बसेरा है ॥
अज्ञान का धुँध अंधेरा है ।
निज ज्ञान की राह दिखा दे मुझे ॥
हे दीनबन्धु०

जिया नश्वर में कुछ ज्ञान नहीं ।
हूँ शाश्वत से भी अनजान सही ॥
पा लूँ परम तत्त्व अरमान यही ।
अपनी करुणा कृपा में डुबा दे मुझे ॥
हे दीनबन्धु०

है आत्मरस की चाह सदा ।
तू दरिया दिल अलाह खुदा ॥
तू ही माझी है मलाह सदा ।
अब भव से पार लगा दे मुझे ॥
हे दीनबन्धु०

माना मुझमें अवगुण भरे अपार ।
दोष दुर्गुण संग हैं विषय विकार ॥
तेरी दयादृष्टि का खुला है द्वार ।
इन चरणों में प्रीति बढ़ा दे मुझे ॥
हे दीनबन्धु०

तू दाता सद्गुरु दीन दयाल ।
जगे ज्ञान ध्यान की दिव्य मशाल ॥
रहमत बरसाके करदे निहाल ।
दिले दिलबर से तो मिला दे मुझे ॥
हे दीनबन्धु०

- जानकी ए. चंदनानी ('साक्षी')
अहमदाबाद ।

★ ईश्वर के मार्ग में आनेवाली बाधाएँ भी सुविधा बन जाती है ।
★ संसार के मार्ग में बाधाएँ सहन करें तो मुसीबत हो जाती है किन्तु ईश्वर के मार्ग में आनेवाली कठिनाईयाँ सहन करें तो वह तपस्या हो जाती है ।

श्रीराम-वशिष्ठ संवाद

श्रीयोगवाशिष्ठ महारामायण का प्रागट्य

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

श्रीयोगवाशिष्ठ महारामायण के वैराग्य प्रकरण में कथा आती है :

भगवान श्रीराम जब करीब सोलह वर्ष के हुए तब तीर्थयात्रा करके आये । उन्हें वैराग्य हुआ । उन्होंने खाना-पीना तक छोड़ दिया अतः वे दिन-पर-दिन कृश होने लगे ।

महाराज दशरथ यदि उन्हें कुछ पूछते तो वे यही जवाब देते : ''मुझे कोई कष्ट नहीं है ।''

एक दिन महाराज दशरथ से मिलने के लिए विश्वामित्रजी आये । दशरथ ने उनका यथायोग्य सत्कार करके उन्हें योग्य आसन दिया । तदनन्तर एक-दूसरे की कुशल पूछते हुए दशरथ ने विश्वामित्रजी को वचन दे दिया : ''आप जिस प्रयोजन के लिए यहाँ पधारे हैं, उसे मैं अवश्य पूरा करूँगा ।''

तब मुनिश्रेष्ठ विश्वामित्र ने अपने यज्ञ की रक्षा के लिए श्रीराम और लक्ष्मण को अपने साथ ले जाने की इच्छा व्यक्त की लेकिन दशरथ ने विनयपूर्वक तरह-तरह के तर्क देकर विश्वामित्रजी के साथ श्रीराम और लक्ष्मण को भेजने में अपनी असमर्थता बताई । इससे विश्वामित्रजी कुपित हो गये ।

तब वशिष्ठजी ने राजा दशरथ को समझाया :

''विश्वामित्रजी जैसे ऋषि यहाँ से नाराज होकर जायें यह आपके लिए उचित नहीं है । आप अपने हृदय को व्याकुल किये बिना अपने बेटों को महर्षि विश्वामित्र के साथ भेजने के लिए राजी हो जाओ ।''

वशिष्ठजी के वचनों को सुनकर राजा दशरथ श्रीराम और लक्ष्मण को विश्वामित्र के साथ भेजने के लिए तैयार हो गये । उन्होंने श्रीराम-लक्ष्मण को बुलाने के लिए द्वारपाल को आज्ञा दी । कुछ ही समय में द्वारपाल के साथ श्रीराम के सेवक आये और उन्होंने राजा दशरथ को बताया :

''जबसे श्रीरामजी तीर्थयात्रा करके आये हैं तबसे उनका मन बहुत उदास रहता है । वे सदा मौनभाव का अवलंबन लेकर बैठे रहते हैं । हम उन्हें पहनने के लिए वस्त्रालंकार तथा खाने-पीने के लिए विभिन्न पकवान लाकर देते हैं तो उसे स्वीकार नहीं करते हैं । अपने पास रहनेवाले सुहृदजनों को उपदेश देते हैं : 'ऊपर-ऊपर से मनोरम दिखायी देनेवाले ये भोग नश्वर हैं अतः इनमें अपना मन मत लगाओ । क्षणभर में नाश होनेवाले पदार्थों में अपना जीवन बरबाद न करो ।' वे न किसीकी बात सुनते हैं न किसी वस्तु की चाह करते हैं । सुंदर वस्तुएँ प्राप्त होने पर भी उनकी अवहेलना करते हैं ।''

> *''विश्वामित्रजी जैसे ऋषि यहाँ से नाराज होकर जायें यह आपके लिए उचित नहीं है । आप अपने हृदय को व्याकुल किये बिना अपने बेटों को महर्षि विश्वामित्र के साथ भेजने के लिए राजी हो जाओ ।''*

सेवकों की बात सुनकर विश्वामित्रजी ने कहा : ''यदि ऐसी बात है तो आपलोग

रघुकुलनन्दन श्रीराम को शीघ्र यहाँ बुला लाओ । यह बड़ी अच्छी बात है कि संसार में उनकी आसक्ति नहीं है और उन्हें युवावस्था में ही आत्मस्वरूप को जानने की इच्छा हुई है । वे विवेक और वैराग्य से संपन्न हैं अतः उन्हें बोध प्राप्त हुआ है ।''

> ''जबसे श्रीरामजी तीर्थयात्रा करके आये हैं तबसे उनका मन बहुत उदास रहता है । वे सदा मौनभाव का अवलंबन लेकर बैठे रहते हैं ।''

मुनीश्वर विश्वामित्र के वचन सुनकर राजा दशरथ ने श्रीरामचंद्रजी को बुला लाने के लिए बारंबार दूत-पर-दूत भेजना आरंभ किया । जब राजा और मुनीश्वर विश्वामित्रजी संवाद कर रहे थे उसी समय श्रीरामचंद्रजी सभा में आये एवं उन्होंने राजा दशरथ, मुनिवर वशिष्ठ एवं विश्वामित्रजी को प्रणाम किया । तदनंतर विश्वामित्रजी ने श्रीरामजी की व्यग्रता का कारण पूछा । श्रीरामजी ने बताया : ''तीर्थयात्रा के अनंतर मेरा मन विवेक से पूर्ण हो गया जिससे मेरी बुद्धि भोगों की ओर से नीरस हो गयी और उसके द्वारा मैंने इस प्रकार विचारना आरंभ किया :

> ''रघुकुलनन्दन श्रीराम को संसार में आसक्ति नहीं है और उन्हें युवावस्था में ही आत्मस्वरूप को जानने की इच्छा हुई है । वे विवेक और वैराग्य से संपन्न हैं ।''

यह जो संसार का विस्तार है, इसमें क्या सुख है ? ये जितने भोग हैं वे सब दुःखरूप हैं, जीव को बाँधनेवाले हैं । आसक्ति ही आदमी को अंधा कर देती है । जो क्षणभंगुर है उसे ही सब 'मेरा-मेरा' कर रहे हैं । वास्तव में तो कोई किसीका नहीं है । वैराग्यरूपी कमल को छिन्न-भिन्न कर देनेवाले ओले की तरह माया का खेल चल रहा है, उससे बचना चाहिए । किन्तु कुछ लोग उससे बचने का प्रयत्न नहीं करते हैं, यह कितने खेद की बात है !''

> विश्वामित्रजी के अनुरोध से वशिष्ठजी ने श्रीराम को आत्मज्ञान का जो उपदेश दिया, वही उपदेश 'श्रीयोगवाशिष्ठ महारामायण' के रूप में प्रसिद्ध हुआ है ।

इस प्रकार संसार के अनेक दोषों को बताते हुए श्रीरामजी ने आत्मज्ञान पाने की इच्छा प्रगट की ।

श्रीरामचन्द्रजी की बातें जिन लोगों ने सुनी वे सब निंश्चल-से प्रतीत होने लगे । अयोध्या की राजसभा के लोगों के अलावा आकाशचारी सिद्ध, गन्धर्व, किन्नर, नारद, व्यास और पुलह आदि श्रेष्ठ मुनियों ने तथा देवता, देवराज इन्द्र, विद्याधरगण एवं महान् दिव्य नागों ने भी श्रीरामचंद्रजी की वे विचित्र अर्थ से परिपूर्ण और परम उदार बातें सुनी थीं । फिर आकाशमार्ग से दिव्य महर्षियों की वह मण्डली राजसभा में उतरी जहाँ वशिष्ठजी, विश्वामित्रजी एवं अन्य अनेक संत-महापुरुष विद्यमान थे । उस मण्डली में सबसे आगे वीणापाणि मुनीश्वर नारद थे और सबसे पीछे सजल जलधर के समान श्याम कान्तिवाले महर्षि व्यास थे । इन दोनों के बीच भृगु, अंगिरा और पुलस्त्य आदि मुनीश्वर एवं च्यवन, उद्दालक, उशीर तथा शरलोम आदि महर्षि भी विद्यमान थे । ज्यों-ही वह मण्डली सभा में उतरी त्यों ही सभा के सभी लोग उठ खड़े हुए एवं वशिष्ठजी और विश्वामित्रजी ने अर्घ्य-पाद्य तथा मधुर वचनों से क्रमशः उन सभी आकाशचारी सिद्धों तथा महर्षियों का पूजन किया । उस दिव्य मण्डली ने भी आदरपूर्वक वशिष्ठजी और विश्वामित्रजी का पूजन किया । तदनंतर राजा दशरथ ने संपूर्ण आदरभाव के साथ उस सिद्ध समुदाय का पूजन किया और एक-दूसरे से सत्कार पाकर सभी आकाशचारी तथा भूमण्डल में विचरनेवाले महर्षि यथायोग्य आसनों पर बैठे । उन सभी ने श्रीरामजी की प्रशंसा की ।

फिर मुनीश्वर वशिष्ठजी, विश्वामित्रजी एवं नारद आदि ने कहा : ''हे रामजी ! तुम्हारा कल्याण हुआ है । तुम्हारी विवेकपूर्ण एवं वैराग्ययुक्त बातें सुननेवालों का भी कल्याण हुआ है... ।''

तदनंतर विश्वामित्रजी के अनुरोध से वशिष्ठजी ने श्रीराम को आत्मज्ञान का जो उपदेश दिया, वही उपदेश फिर 'श्रीयोगवाशिष्ठ महारामायण' के रूप में प्रसिद्ध हुआ है ।

श्रीरामजी को जहाँ-जहाँ शंका होती थी वहाँ-वहाँ वशिष्ठजी उसका निवारण करते थे । ऐसा करते-करते शाम होती, तब सत्संग संपन्न होता । वशिष्ठजी का सत्संग समाप्त होने पर नौबत-नगारे बजने लगते और फूलों की वृष्टि होती । सब वशिष्ठजी को प्रणाम करते । फिर अपने-अपने स्थान में जाकर स्नानादि करके संध्या-वंदन करते, प्राणायाम करते, प्रणव का जप करते ताकि बुद्धि शुद्ध रहे, विवेक बना रहे । दिल में लगन थी और पवित्रता भी थी ।

सत्संग सुनने के बाद श्रीराम सत्संग के विचारों का मनन करते थे, उनका चिंतन करते थे, जो बात समझ में नहीं आती थी, उसे दूसरे दिन पूछते थे । यदि बात समझ में आ जाती तो मन शांत हो जाता ।

सत्संग सुनने के बाद श्रीराम सत्संग के विचारों का मनन करते थे, उनका चिंतन करते थे कि : 'जगत् भ्रममात्र है, स्वप्न है । जिसकी जैसी मान्यता होती है उसे जगत् वैसा ही भासता है । वास्तविक सुख क्या है ? सार तत्त्व क्या है ? मुनीश्वर ने बताया है कि वह अजर, अमर, अखण्ड, अविनाशी, शाश्वत् और एकरस है । उस तत्त्व की अनुभूति कैसे हो ?' इस प्रकार का मनन-चिंतन करते-करते जो बात समझ में नहीं आती थी, उसे दूसरे दिन पूछते थे । यदि बात समझ में आ जाती तो मन शांत हो जाता ।

उन्हें अपने उद्धार की इच्छा थी, ज्ञानप्राप्ति करने की लगन थी । अभी तो... दो-तीन घंटे सत्संग सुना, प्रसाद पाया और चले घर । वहाँ पहुँचकर पुनः उसी दुनिया में डूब गये । सत्संग की बातों का चिंतन-मनन करके विवेक-वैराग्य बढ़ायें, ज्ञान की बातों को पचाते जायें, व्यवहार में लायें- ऐसी उत्सुकता ही आज के लोगों में नहीं है । जिसको ईश्वर-प्राप्ति की इच्छा होती है वह तो सुने हुए वचनों पर विचार करता है और समाधान ढूँढ़ता है । मेहनत करता है तो समाधान मिल भी जाता है । अगर समाधान नहीं मिलता है तो अदब से, आदरपूर्वक जाकर गुरुजी से पूछता है ।

जिसे ईश्वर को पाने की इच्छा होती है वह तो सुने हुए वचनों पर विचार करता है और समाधान ढूँढ़ता है । मेहनत करता है तो समाधान मिल भी जाता है । अगर समाधान नहीं मिलता है तो अदब से, आदरपूर्वक गुरुजी से पूछता है ।

यदि आत्मविचार को दृढ़तापूर्वक दुहरायें तो वृत्ति आत्माकार होती जाती है और आत्मा का ज्ञान हो जाता है । जिसको आत्मज्ञान हो जाता है उसका तो बेड़ा पार हो जाता है, उसके संग में आनेवालों का भी कल्याण हो जाता है । उनका संग करनेवालों के पापों का नाश होने लगता है । वे भी यदि दूसरे पाप न करें तो इस मार्ग के पथिक बन जाते हैं । अतः संतों की संगति तो करो लेकिन छूमंतर हो जाये और भगवान का दर्शन हो जाये ऐसी अपेक्षा न रखो । जैसे-जैसे वासनाएँ मिटती जाएँगी, पाप कटते जाएँगे वैसे-वैसे भीतर का रस प्रकट होता जाएगा ।

संतों की संगति तो करें लेकिन छूमंतर हो जाए और भगवान का दर्शन हो जाये ऐसी अपेक्षा न रखें । जैसे जैसे वासनाएँ मिटती जाएँगी, पाप कटते जाएँगे वैसे-वैसे भीतर का रस प्रकट होता जाएगा ।

आदमी के चित्त में जैसी-जैसी वासना होती है वह वैसी-वैसी योनियों में, वैसे-वैसे शरीर धारण करता है । किन्तु वासनाओं से अगर पार हो जाये तो स्वयं ब्रह्मरूप हो जाता है, जैसे भगवान राम हो गये । योगियों को भी अपर ईश्वर, दूसरा ईश्वर कहते हैं । जिसको वासना नहीं, वे सब ईश्वररूप

हैं। अनेक हृदयों में, अनेक रूपों में प्रकट हुए ईश्वर को ही अनेक रूपों में, अनेक नामों में मानते हैं। जिसने भी भगवान को जाना, वह भगवत्स्वरूप हो गया।

वास्तव में तो तुम भी भगवत्स्वरूप ही हो लेकिन वासना के कारण तुम्हारा वह रूप ढँका हुआ है। अतः ज्ञान-ध्यान-सत्संग-स्वाध्याय आदि पुरुषार्थ से उसे निरावरण करके तुम भी श्रीरामचंद्रजी की तरह अपने स्वरूप में स्थित हो जाओ। जैसे श्रीरामजी अपने आत्मस्वरूप में स्थित होकर, सूरमा होकर युद्ध करते हैं, राजा होकर राज्य करते हैं, कभी मोहनभोग पाते हैं तो कभी जंगल की झोंपड़ी में रहते हैं। फिर भी अपने चैतन्य राम स्वभाव में श्रीराम सदा सम रहते हैं। ऐसे ही तुम भी साधना और सत्संग करके अपने सम-स्वरूप में, साक्षी, चैतन्य, रामस्वरूप में स्थित हो जाओ...

वास्तव में तो तुम भी भगवत्स्वरूप ही हो लेकिन वासना के कारण तुम्हारा वह रूप ढँका हुआ है। अतः ज्ञान-ध्यान-सत्संग-स्वाध्याय आदि पुरुषार्थ से उसे निरावरण करके तुम भी श्रीरामचंद्रजी की तरह अपने स्वरूप में स्थित हो जाओ।

❀

(पृष्ठ १६ का शेष)

देर-सबेर आप मुझे भी दर्शन दोगे ही। अगर नहीं भी दिया तब भी यह मानकर प्रसन्नता हो रही है कि मेरी पूजा आप तक पहुँच तो रही है...''

आप जो देते हो वह जरूर उस अन्तर्यामी ईश्वर तक पहुँचता ही है। इसमें संदेह मत करो कि 'पहुँचता है कि नहीं पहुँचता...' जब आपकी देखने की आँखें खुल जायेंगी तब आपको दिखेगा भी सही।

किसीके लिए आप कुभाव करें और जब वह व्यक्ति मिले तब आप देखें कि वह आपसे कैसा व्यवहार करता है। किसीके लिए आप सद्भाव भेजें फिर उसके मिलने पर आप देखें कि वह आपसे कैसा व्यवहार करता है।

भारत कर्मभूमि है। मुक्ति का द्वार है यह देश। उत्तम कर्म एवं सत्संगति, महापुरुषों का सान्निध्य एवं उपदेश मनुष्य को मुक्तिधाम तक ले जा सकता है। शास्त्र कहते हैं :

'आसक्ति' कभी जीर्ण होनेवाली नहीं है किन्तु वही आसक्ति संत महापुरुषों के चरणों में और उनके वचनों में हो जाये, स्वामी लीलाशाह बापू के श्रीचरणों और वचनों में हो जाये, भगवान वेदव्यासजी के श्रीचरणों एवं कथनों में हो जाये तो वही आसक्ति मुक्ति देनेवाली है।

डिस्को में, वाइन में, क्लब में स्त्री-पुरुषों के नाचगान में आसक्ति करके तो बरबादी ही होती है, पायमाली ही होती है लेकिन भगवान में और भगवान के प्यारे संतों के वचनों में आसक्ति करने से मुक्ति और भुक्ति दोनों दासियाँ बन जाती हैं....

★ समस्त देहधारियों में मनुष्य देह श्रेष्ठ है। ★ समस्त नदियों में गंगा सर्वश्रेष्ठ है। ★ विश्व के देशों में भारत पवित्र देश है। ★ समय में वह क्षण श्रेष्ठ है कि जिसमें मनुष्य भगवान का ध्यान करता है। ★ दिनों में वह दिन श्रेष्ठ है कि जिस दिन मनुष्य सत्कर्म करता है। ★ प्रत्येक व्यवहार में धर्म-संयुक्त व्यवहार श्रेष्ठ है। ★ समस्त कर्मों में से अंतःकरण को विश्रांति के मार्ग पर ले जाये वह कर्म श्रेष्ठ है। ★ समस्त ज्ञानों में आत्मज्ञान सर्वश्रेष्ठ है। ★ समस्त धर्मों में मन-बुद्धि को एकाग्र करना महान् धर्म है। ★ समस्त तपश्चर्याओं में एकाग्रता महान तपश्चर्या है।

पाओ अपने आपको...

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

सूर्य का स्वभाव है प्रकाश देना, चंद्र का स्वभाव है शीतलता देना, माँ का स्वभाव है बच्चों को पोसना । ऐसे ही भगवान का और भगवान को पाये हुए महापुरुषों का स्वभाव है दूसरों का कल्याण करना । जो भी सामने आ जाए उसका कल्याण किये बिना वे नहीं रह सकते हैं ।

जोगी मछन्दरनाथ ऐसे ही महापुरुष थे । एक बार जोगी मछन्दरनाथ किसी नगर में गये । वहाँ के लोगों ने मछन्दरनाथ को बताया :

''इस नगर के राजा अपना राज्य अपने बेटों को सौंपकर जंगल में चले गये हैं । वहीं पर रहते हैं । जब भूख लगती है तब नगर में मधुकरी करने आते हैं । भिक्षा में जो भी रूखा-सूखा टुकड़ा मिलता है वह खा लेते हैं । कौपीन पहनकर रहते हैं । किसीके सामने आँख उठाकर देखते भी नहीं हैं तो बात करने का तो सवाल ही नहीं उठता है । बड़े तपस्वी हैं, महात्यागी हैं...''

सूर्य का स्वभाव है प्रकाश देना, चंद्र का स्वभाव है शीतलता देना, माँ का स्वभाव है बच्चों को पोसना । ऐसे ही भगवान का और भगवान को पाये हुए महापुरुषों का स्वभाव है दूसरों का कल्याण करना ।

एक दिन जब वह राजा नगर में आया और भिक्षा में जो कुछ मिला वह लेकर वापस जाने लगा तब मछन्दरनाथ ने जान-बूझकर उसे जरा-सा धक्का मार दिया ।

वह बोल उठा : ''अरे ! आप मुझे धक्का देकर मेरी परीक्षा लेना चाहते हैं ? परंतु ऐसी हरकतें करके भी आप मुझे गुस्सा नहीं दिला सकते ।''

मछन्दरनाथ ने कुछ जवाब नहीं दिया । पाँच-पच्चीस कदम आगे चलकर उन्होंने फिर से उस त्यागी राजा को कोहनी मारी । उसका भिक्षापात्र गिरते-गिरते बच गया ।

उस राजा ने पुनः कहा :

''आप क्या समझते हैं ? आपके ऐसे कृत्यों से परेशान होकर मैं गुस्सा हो जाऊँगा ? नहीं, यह नहीं होगा । महाराज ! तप करने के लिये मैंने राज-पाट छोड़ दिया है, वस्त्राभूषण छोड़ दिये हैं, सगे-संबंधियों को भी छोड़ दिया है । अब मेरे पास क्या है जो आप मुझसे छीनना चाहते हैं ? मेरे पास कुछ नहीं है । मैं महात्यागी हूँ ।''

तब मछन्दरनाथ ने कहा :

''अभी बहुत कुछ त्याग करना बाकी है ।''

यह सुनकर त्यागी राजा बोल उठा :

''अरे महाराज ! मेरे पास तो कुछ नहीं है । केवल यह कौपीन है । आप कहें तो उसका भी त्याग कर दिखाऊँ ।''

मछन्दरनाथ : ''मैं कौपीन का त्याग करने के लिये तो नहीं कहता हूँ लेकिन तुम अगर कौपीन का त्याग कर भी दो तब भी बहुत कुछ त्याग करना बाकी रह जाएगा ।''

राजा को मछन्दरनाथ की बात कुछ समझ में न आयी । तब उन दयालु महापुरुष ने अपनी करुणा-कृपा बरसाते हुए कहा :

''अभी बहुत कुछ त्याग करना बाकी है । अभी स्थूल और सूक्ष्म शरीर में से तुम्हारी अहंता नहीं छूटी है । तुम कहते हो : 'मैंने राजपाट, वस्त्रालंकार, सगे-संबंधियों को त्याग दिया ।' परंतु जब तुम इस धरती पर आये थे तब साथ में क्या लेकर आये थे ? वास्तव में तुम्हारा था ही क्या जो तुमने त्याग दिया ? राज्य

तो तुम्हारे आने से पहले भी था और जब तुमने उसे त्याग दिया ऐसा मानते हो तब भी राज्य तो वहीं पर है । तुम इस संसार में अकेले आये हो और जाओगे भी अकेले, तब तुम जिनका (अपने सगे-संबंधियों का) त्याग करने की बात कर रहे हो उनका तो त्याग हो ही जाएगा । तुम्हारे पास तुम्हारा अपना क्या था जिसे तुमने त्याग दिया है ? माता-पिता के रज-वीर्य से तुम्हारे शरीर का जन्म हुआ और पहले किये हुए पुण्यों के प्रभाव से तुम्हें राज्य मिला । अब त्याग करना बाकी है अपना अहंकार । 'मैं त्यागी हूँ... मैंने राजपाट का त्याग किया है ।' अरे ! 'राजपाट का त्याग करनेवाला मैं कौन हूँ ?' इसे जरा खोजो । 'मैं कैसा हूँ ?' इसे जानो । उसके लिये तुम महापुरुषों की शरण में जाओ, सत्संग सुनो और विचार करो । तब ही तुम अपने-आपको जान पाओगे ।''

मंदिर के देव तुम्हें आत्मानुभव नहीं करा सकते । जब तक आत्मज्ञान का सत्संग नहीं मिलता है, आत्मज्ञानी गुरु की कृपा हजम नहीं होती है तब तक आत्मानुभव नहीं हो सकता ।

भीतर की शांति पाने का सब से सरल उपाय यह है कि न दुःख से भागो न सुख में चिपको वरन् सुख-दुःख के साक्षी बने रहो । सुख और दुःख आते-जाते रहते हैं । सुख जाता है तो दुःख दे जाता है और दुःख जाता है तो सुख दे जाता है ।

पचास साल तक भले ही मंदिर-मस्जिद में जाते रहो, पूजा-पाठ करते रहो, आरती करते रहो लेकिन मंदिर के वे देव भी तुम्हें आत्मानुभव नहीं करा सकते । जब तक आत्मज्ञान का सत्संग नहीं मिलता है, आत्मज्ञानी गुरु की कृपा हजम नहीं होती है तब तक आत्मानुभव नहीं हो सकता । भीतर के देव का अनुभव करने के लिये सद्गुरु की शरण में जाना ही पड़ता है ।

सद्गुरु के वचनों को आदरपूर्वक सुनकर उस पर अमल करने से सदियों से भटकता हुआ चित्त वश में होता है, अपने-आप में स्थिर होता है ।

सद्गुरु के वचनों को आदरपूर्वक सुनकर उस पर अमल करने से सदियों से भटकता हुआ चित्त वश में होता है, अपने-आप में स्थिर होता है । चित्त को स्थिर करने के लिये एक यह भी उपाय है कि किसी एकांत स्थान में या अपने कमरे के कोने में बैठकर आँखों के सामने अपने इष्टदेव का या गुरुदेव का चित्र रखो । उससे तीन-चार फीट दूर बैठकर आँख की पलकें न गिरें उस तरह चित्र को एकटक निहारते रहो । बाद में आँखें बंद करके गुरु के या इष्ट के चित्र को भ्रूमध्य में निहारो । इस प्रकार का प्रयोग हररोज पाँच मिनट के लिये भी करोगे तो मन की शक्ति बढ़ेगी और बलवान मन को जहाँ लगाना चाहोगे वहाँ लगेगा ।

हम कहाँ हैं ? बाजार में हैं कि खेत में, घर में हैं कि दुकान में, उसका महत्त्व नहीं है परंतु हमारा मन कहाँ है, हमारे मन में समझ कैसी है उसका महत्त्व है । अगर हम सुख में आकर्षित और दुःख में अशांत हो जाते हैं तो हम स्वर्ग में होते हुए भी नरक बना लेते हैं ।

संसार की चीज-वस्तुएँ कितनी भी हों, उससे मन की शांति नहीं मिलती है । अनेकों सुविधाएँ होने के बावजूद भी यदि मन में शांति नहीं है तो वे सुविधाएँ किस काम की ? जिसके पास बाहर की सुविधाएँ भले नहीं हों लेकिन मन में यदि शांति और आनंद हो तो वह वास्तव में सुखी है और भीतर की शांति पाने का सब से सरल उपाय यह है कि न दुःख से भागो न सुख में चिपको, वरन् सुख-दुःख के साक्षी बने रहो । सुख और दुःख आते-जाते रहते हैं । सुख जाता है तो दुःख दे जाता है और दुःख जाता है तो सुख दे जाता है ।

एक भाई किसी महाराज के पास गये और कहने लगे :

''महाराज ! इस जिंदगी में मैंने दुःख-ही-दुःख देखे हैं ।''

महाराज ने पूछा : ''कितने दुःख देखे हैं ?''

उसने कहा : ''कितने दुःख गिनाऊँ ? मैंने बहुत दुःख देखे हैं ।''

महाराज ने कहा : ''तूने सुख देखा ही न हो तो 'बहुत दुःख' कैसे कह सकता है ? थोड़ा सुख भी मिला होगा तभी तो 'बहुत दुःख मिला'-ऐसा कह सकता है। केवल दुःख ही दुःख होता तो बहुत या थोड़ा हो नहीं सकता । सुख भी आया और गया, दुःख भी आया और गया। ये तो आने-जानेवाले मेहमान हुए । तू तो वही-का-वही रहा उसे देखनेवाला साक्षी ।''

जैसे, हाईवे पर यदि तुम्हारा बंगला हो तो रोड़ पर से बस, टैक्सी, ऑटोरिक्षा, साईकिल, स्कूटर, कार आदि गुजरते हैं । कभी बारात भी गुजरती है और कभी अर्थी लेकर स्मशान में जानेवाले लोग भी गुजरते हैं । उन सबको अपने बंगले में बैठकर तुम देखते रहो तो ठीक है लेकिन जो आये उसके साथ चलने लग जाओगे, बारात को देखकर नाचने लगो या अर्थी को देखकर रोने लगो तो बंगले में शांतिपूर्वक कैसे बैठ सकोगे ? ऐसे ही अपने मनरूपी हाईवे पर सुख-दुःख की वृत्तियाँ, मान-अपमान के प्रसंग आदि आते-जाते रहते हैं । जब हम आत्मारूपी घर को छोड़कर उन वृत्तियों के साथ एक होकर मन को दौड़ाते रहते हैं तो परेशान हो जाते हैं परंतु यदि आत्मारूपी बंगले में बैठकर सुख-दुःख, मान-अपमान को केवल देखते रहें तो आनंद ही आनंद है ।

हम कहाँ हैं ? बाजार में हैं कि खेत में, घर में हैं कि दुकान में, उसका महत्त्व नहीं है परंतु हमारा मन कहाँ है, हमारे मन में समझ कैसी है उसका महत्त्व है ।

जैसे सागर की उछलती तरंगों की गहराई में शांत उदधि है और उस शांत उदधि के आधार पर ही तरंगें उछलती हैं । ऐसी कोई तरंग नहीं है जो सागर से अलग होकर सड़क पर दौड़ सके । ऐसे ही अपने मन की तरंगें भी शांत आत्मा के आधार पर ही उठती हैं । ऐसा कोई मन नहीं है जो चैतन्य के आधार के बिना संकल्प-विकल्प कर सके । परमात्मा के इतने निकट होते हुए भी मानव दुःखी, चिंतित और भयभीत रहता है । क्यों ? क्योंकि आने-जानेवाली परिस्थितियों को सत्य मानकर उनके साथ वह एक हो जाता है ।

ऐसा कोई मन नहीं है जो चैतन्य के आधार के बिना संकल्प-विकल्प कर सके । परमात्मा के इतने निकट होते हुए भी मानव दुःखी, चिंतित और भयभीत रहता है । क्यों ? क्योंकि आने-जानेवाली परिस्थितियों को सत्य मानकर उनके साथ वह एक हो जाता है ।

जब हम दरिया किनारे घूमने जाते हैं, तब उछलती तरंगें देखने का मजा आता है किन्तु वह मजा तभी तक आता है जब तक किनारे पर खड़े रहकर उसे देखते रहें । अगर किनारा छोड़कर तरंगों के साथ घुलमिल जायें तो तरंग देखने का मजा तो क्या आयेगा लेकिन तरंगें ही हमको घसीटकर गहरे पानी में डुबा देंगी । ऐसे ही जीवन में सुख-दुःख की तरंगें, मान-अपमान की तरंगें, यश-अपयश की तरंगें, तंदुरुस्ती और बीमारी की तरंगें आती-जाती रहती हैं । अगर आप अपने-आप में स्थित रहकर आत्मारूपी किनारे पर खड़े होकर उन तरंगों को देखते रहोगे तो मजा आएगा परंतु उनके साथ एक हो जाओगे तो वे तुम्हें बहा ले जायेंगी । (शेष पृष्ठ २३ ऊपर)

जैसे स्वप्न के पदार्थों को लेकर कोई जाग नहीं सकता, ऐसे ही जगत् की सत्यता को पकड़कर कोई जगदीश्वर का साक्षात्कार नहीं कर सकता और संसार को सत्य मानने का वह भ्रम सद्गुरु की करुणा-कृपा के बिना नहीं मिटता ।

नासमझी है दुःखों का घर

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

यह भी कैसी विचित्र बात है कि सभी दुःखों और परेशानियों को मिटाना चाहते हैं लेकिन फिर भी हर दिन बंधन बढ़ाते जा रहे हैं, परेशानियों को पोसते जा रहे हैं । मुक्ति सभी चाहते हैं किन्तु मुक्ति पाने की युक्ति से दूर भागते हैं ।

> *सभी लोग दुःखों और परेशानियों को मिटाना चाहते हैं लेकिन फिर भी हर दिन बंधन बढ़ाते जा रहे हैं । मुक्ति सभी चाहते हैं किन्तु मुक्ति पाने की युक्ति से दूर भागते हैं ।*

कुछ वर्ष पहले की बात है : किसी व्यक्ति ने आकर मुझसे कहा : '' बापू ! इतने सारे लोग भजन कर रहे हैं, एक मैं नहीं करूँ तो क्या घाटा होगा ? मुझे मुक्ति नहीं चाहिए ।''

उसकी बात सुनकर मुझे हँसी आयी क्योंकि वह सरलता से बोल रहा था । मैंने कहा : ''अच्छा, मुक्ति नहीं चाहिए किन्तु सुख तो चाहते हो न ? परेशानियाँ तो मिटाना चाहते हो न ?''

उसने कहा : ''जी ।''

''तो फिर हमारे ये सारे प्रयास किसलिए हैं ? हम कहाँ कहते हैं कि तुम मोक्ष पा लो । हम तो यही चाहते हैं कि तुम्हारी परेशानियाँ मिट जायें और परेशानी मिटाना ही तो मोक्ष है । छोटी परेशानी मिटाने में कम मेहनत है, बड़ी परेशानी के लिए ज्यादा, जन्म-मरण की परेशानी मिटाने के लिए आत्मज्ञान की मेहनत करनी पड़ती है ।''

यदि थोड़ी-थोड़ी परेशानियों, दुःखों, बंधनों से थोड़े समय के लिए छूटना चाहते हो तो थोड़ा ज्ञान, थोड़ा पुरुषार्थ और थोड़ा सुख ही काफी है और यदि सदा मुक्ति चाहिए, पूर्ण निर्दुःख, पूर्ण निर्बन्ध, पूर्ण सुख चाहिए तो पूर्ण ज्ञान के लिए पूर्ण पुरुषार्थ करना ही चाहिए ।

दुःख कोई नहीं चाहता । मुक्ति नहीं चाहते तो क्या बंधन चाहते हो ? तुम्हें कोई जेल में डाल दे, कोई तुम्हारे पर आदेश चलाये, पत्नी तुम्हें आँखें दिखाये तो क्या तुम्हें अच्छा लगता है ? नहीं, क्योंकि तुम स्वतंत्रता चाहते हो, मुक्ति चाहते हो और मुक्ति पानी है तो फिर ध्यान-भजन, जप-सेवा-स्वाध्याय भी तो करना पड़ेगा । मुक्ति की मंजिल तक पहुँचना है तो उसकी राह पर तो चलना ही होगा ।

अनेकों को ऐसा लगता है कि 'भाई ! हममें तो भगवान के रास्ते चलने की ताकत नहीं है, हमें ज्ञान नहीं चाहिए...' ज्ञान नहीं चाहिए, मुक्ति नहीं चाहिए तो क्या मुसीबतें चाहिए ? दुःख चाहिए ? यह तो नासमझी है । आदमी तमोगुण में आ जाता है तब कहता है कि 'हमें ईश्वर से क्या लेना-देना ? संत-वंत कुछ नहीं, पुण्य-वुण्य कुछ नहीं ।' तो पाप करके भी तो तुम सुख ही चाहते हो न ? यदि पाप करने में सुख होता तो सभी पापी आज मजे में ही होते, अशान्त और दुःखी न होते और मरने के बाद प्रेत या पशु होकर न भटकते, मुक्त हो जाते, शाश्वत स्वरूप से एक हो जाते ।

> *सुख पाप में नहीं, सुख वासना में नहीं, सुख इच्छाओं की पूर्ति में नहीं वरन् सुख है मुक्ति में, सुख है मुक्ति पाये हुए ब्रह्मवेत्ताओं के श्रीचरणों में । इच्छा-वासना की निवृत्ति में परम सुख है ।*

सुख पाप में नहीं, सुख वासना में नहीं, सुख

इच्छाओं की पूर्ति में नहीं वरन् सुख है मुक्ति में, सुख है मुक्ति पाये हुए ब्रह्मवेत्ताओं के श्रीचरणों में। इच्छा-वासना की निवृत्ति में परम सुख है।

मैंने सुना है। एक बार हनुमानप्रसाद पोद्दार और जयदयाल गोयन्दका आपस में चर्चा कर रहे थे : ''आजकल तो कहलाने लगे बड़े ज्ञानी, बड़े संन्यासी... पहले लोग कितना-कितना तप करते थे ! इन्द्र ने १०८ वर्ष तक ब्रह्माजी की सेवा की, तब ब्रह्मज्ञान मिला। और आज... ? घर छोड़कर बन गये साधु-संन्यासी और लिख देंगे : १००८ स्वामी फलानानंदजी....''

तब एक किसान ने उठकर पोद्दारजी से कहा :

''भाईजी ! १०८ वर्ष तक इन्द्र ने ब्रह्माजी की सेवा की, तब ज्ञान मिला, तो १०८ वर्ष देवताओं के कि मनुष्य के १०८ वर्ष ? अगर देवताओं के वर्ष गिनते हो तो उनकी आयुष्य तो १०० वर्ष से अधिक नहीं होती और अगर मनुष्य के १०८ वर्ष गिनते हो तो देवताओं के १०८ दिन से अधिक नहीं होते।''

तब हनुमानप्रसाद पोद्दार को हुआ कि किसान के वेष में भी ये कोई पहुँचे हुए महात्मा लगते हैं। उनकी सात्त्विक श्रद्धा थी न !

एक बार पोद्दारजी के मुख से निकल गया : ''जो मिर्ची का अचार नहीं छोड़ सकते, जो चाय नहीं छोड़ सकते, जों दो वक्त का भोजन नहीं छोड़ सकते, वे ब्रह्मज्ञान कैसे पा सकते हैं ?''

पहले वे इस प्रकार की आलोचना किया करते थे। साधना-काल में इस प्रकार का कभी हो जाता है। उनकी इस बात को अखंडानंद सरस्वतीजी ने सुन लिया। वे गये भिक्षा लेने पोद्दारजी के घर। उनकी धर्मपत्नी ने बड़े प्रेम से भिक्षा दी। तब अखंडानंदजी ने कहा : ''बहनजी ! मिर्ची का अचार है ?''

धर्मपत्नी ने कहा : ''हाँ महाराज ! है।''

''अच्छा, तो दो-तीन टुकड़े दे दो।''

धर्मपत्नी ने अचार दिया। तब पुन: अखंडानंदजी बोले : ''बहनजी ! भाईजी घर पर हैं ?''

''जी हाँ महाराज ! भीतर के कक्ष में कुछ लेखन-कार्य कर रहे हैं।''

''अच्छा ! जरा भाईजी को बुलाना।''

भाईजी बाहर आये और आकर प्रेम व श्रद्धा से प्रणाम किया : ''महाराज ! **ॐ नमो नारायणाय।**''

अखंडानंदजी : **''ॐ नमो नारायणाय।** सेठजी ! आपने प्रवचन में कहा था : 'अचार चाहिए, खिचड़ी चाहिए, चाय चाहिए... जो 'चाहिए-चाहिए' में लगे हैं और अपने को ब्रह्मज्ञानी मानते हैं वे क्या ब्रह्मज्ञानी होते हैं ? जो दो समय का भोजन नहीं छोड़ सकते, वे क्या ब्रह्मज्ञान पा सकते हैं ?'

...तो जिन्हें वास्तव में ब्रह्म-परमात्मा का अनुभव हो गया है उनके लिए सेठजी ! मैं पूछता हूँ कि कमबख्त दो मिर्चियाँ, क्या उनकी ब्रह्मनिष्ठा के स्वाद को कम कर देगी ? क्या अचार की ये दो मिर्चियाँ उनके परमात्मज्ञान के रस को छीन लेगी ?''

तब हनुमानप्रसाद पोद्दार हाथ जोड़ते हुए बोले : ''महाराज ! क्षमा कीजिएं। आप जैसों के आगे तो हम नतमस्तक हैं।''

जिनको ब्रह्म-परमात्मा का अनुभव हो गया है उनके लिए मिर्ची का अचार तो क्या, छप्पन पकवान तो क्या, देवताओं के भोग भी नीरस हैं। वे उनको आसक्त नहीं कर सकते। ऐसे दिव्य ब्रह्मज्ञान के रस का वे आस्वाद कर चुके होते हैं कि जिसके आगे ब्रह्मलोक के सुख तक फीके पड़ जाते हैं तो मनुष्य लोक के तुच्छ सुख में वे क्या आसक्त होंगे ? जिनको आत्मा-परमात्मा का शुद्ध अनुभव हो जाता है, उनके लिए संसार के सुख-दु:ख, ऊँचाई-नीचाई कोई मायने नहीं रखती क्योंकि उन्होंने अपने शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वरूप को जान लिया है।

जिनको ब्रह्म-परमात्मा का अनुभव हो गया है उनके लिए देवताओं के भोग भी नीरस हैं। वे उनको आसक्त नहीं कर सकते।

पाँच वर्ष में दुगुने करे और खुश हो जाये वह है लोभी मनुष्य और रोज प्रभु का भजन करके प्रभु का हो जाये वह है साधक !

पयाहारी बाबा

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

दुनियादार जहाँ सिर पटकते हैं ।
वहाँ आशिक कदम रखते हैं ॥

भोगी जिस संसार के पीछे आँखें मूँदकर अँधी दौड़ लगाता है, वह संसार उसका कभी नहीं होता । संसार उसे सुख तो नहीं देता वरन् देता है मुसीबतें, जिम्मेदारियाँ, तनाव और अशांति । ज़बकि योगी, भक्त या सेवक सेव्य को प्रसन्न करने के लिए संसार की सेवा करता है । वह संसार से कुछ चाहता नहीं है फिर भी उसे बिना माँगे ही बहुत कुछ मिल जाता है ।

भोगी चाहता है यश और मान, फिर भी उसे इतना नहीं मिलता जबकि योगी नहीं चाहता है फिर भी उसे अथाह मान, प्रेम और आनंद मिलता है ।

भोगी चाहता है यश और मान, फिर भी उसे इतना नहीं मिलता जबकि योगी नहीं चाहता है फिर भी उसे अथाह मान, अथाह प्रेम और अथाह आनंद मिलता है । दुनियादार जिस यश, मान और सुख को चाहते हैं- योगी, सेवक उसकी परवाह तक नहीं करता वरन् यश, मान और सुख उसके पीछे पड़ता है ।

हनुमानजी के पीछे क्या यश-मान नहीं पड़ा ? अभी तक हनुमानजी का यश है, मान है और अभी तक हनुमानजी को करोड़ों लोग प्रेम करते हैं और रावण...? रावण चाहता था यश-मान, लेकिन फिर भी हर साल आग लगा दी जाती है उसके पुतले को । रावण भोगवाद का प्रतीक है और हनुमानजी, श्रीरामजी और श्रीकृष्ण योगवाद के प्रणेता हैं ।

एक बार पृथ्वीराज चौहाण सुप्रसिद्ध 'भक्तमाल' के रचयिता नांभाजी महाराज के शिष्य पयाहारी बाबा के चरणों में प्रणाम करने गये और बोले :

''बाबा ! आप चलिए, मैं आपको द्वारिकाधीश की यात्रा करवाकर आऊँ ।''

बाबा मुस्कराये । रात्रि को जब पृथ्वीराज चौहाण शयन कर रहे थे तब बाबा उनके बंद शयनखंड में प्रकट हुए और बोले :

''पृथ्वीराज ! तू मुझे द्वारिकाधीश के दर्शन करवाने के लिए ले जाना चाहता है ? मैं तुझे यहीं द्वारिकाधीश के दर्शन करवा देता हूँ ।''

''पृथ्वीराज ! तू मुझे द्वारिकाधीश के दर्शन करवाने के लिए ले जाना चाहता है ? मैं तुझे यहीं द्वारिकाधीश के दर्शन करवा देता हूँ ।''

बाबा ने पृथ्वीराज के नेत्रों पर हाथ रखा और थोड़ी ही देर में बोले :

''खोल आँखें । क्या दिख रहा है ?''

पृथ्वीराज देखते हैं तो साक्षात् द्वारिकाधीश ! वे गिर पड़े पयाहारी बाबा के चरणों में ।

पयाहारी बाबा श्रीरामजी को अपना इष्ट मानते थे । एक बार जयपुर के निकट गलता में अपनी गुफा में बैठे थे तब एक शेर आया । बाबा को हुआ :

'यह शेर आकर द्वार पर खड़ा है, अतिथि के रूप में आया है और खुराक चाहता है । यह अतिथि रोटी-सब्जी तो खायेगा नहीं । इसे तो माँस की जरूरत है । अब क्या करें ?'

पयाहारी बाबा ने उठाया चाकू और अपनी जाँघ का माँस काटकर रख दिया शेर के सामने । **अतिथि देवो भव ।** द्वार पर अतिथि आया है तो उसकी भूख-प्यास मिटाना अपना कर्त्तव्य है । यह भारतीय संस्कृति है ।

शेर तो माँस खाकर चल दिया किन्तु श्रीरामजी

से रहा न गया । भगवान श्रीराम साकार रूप में प्रगट हो गये । पयाहारी बाबा ने श्रीराम का स्तवन किया और श्रीराम ने प्रेम से पयाहारी बाबा का आलिंगन किया। भगवान के संकल्प से पयाहारी बाबा की जाँघ पूर्ववत् हो गयी और चित्त श्रीराम-दर्शन से पुलकित हो उठा ।

पयाहारी बाबा ने उठाया चाकू और अपनी जाँघ का माँस काटकर रख दिया शेर के सामने । अतिथि देवो भव ।

दुनिया जिन श्रीराम के दर्शन करने के लिए तड़पती है, वे ही श्रीराम अतिथिधर्म के प्रति निष्ठा देखकर सेवक के दीदार के लिए आ गये । सेवा में कितनी शक्ति है ! दुनिया तो सेव्य को चाहती है और सेव्य सेवक को चाहता है ।

जो सुख सेवा से मिलता है, जो सुख निष्कामता से मिलता है वह सुख डॉलरों में कहाँ ? वह सुख दुनिया के भोगों में कहाँ ? प्राणीमात्र में बसे हुए परमात्मा के नाते कर्म करने से जिस शांति, सुख और सच्चे जीवन का छोर मिलता है वह दूसरों का शोषण करने की बेवकूफी में कहाँ ? दूसरों का शोषण करनेवालों को फिर सुख के लिए शराब-कबाब और कुकर्मों की शरण लेनी पड़ती है ।

प्राणीमात्र में बसे हुए परमात्मा के नाते कर्म करने से जिस शांति, सुख और सच्चे जीवन का छोर मिलता है वह दूसरों का शोषण करने की बेवकूफी में कहाँ ?

निष्काम कर्म करने में जिन्हें मजा नहीं आता वे बेचारे कामना-कामना के चक्कर में चौरासी के चक्कर में चलते ही रहते हैं ।

एक दिन में १४४० मिनट का समय है हमारे पास । उसमें से कम-से-कम २०-२० मिनट सुबह, दोपहर, शाम तो निकालें निष्काम होने के लिए ! २४ घण्टों में से १ घण्टे ही सही, निष्काम भाव से ईश्वर का भजन करें... आज तो भजन भी दुकानदारी हो गया है । 'इतनी माला करें, जप-ध्यान करें तो जरा प्रॉब्लेम न आयें... नौकरी अच्छी चले... छोकरे अच्छे रहें... ।' जप-ध्यान से भी यदि नश्वर ही चाहा तो फिर शाश्वत् के लिए कब समय निकालोगे ? ईश्वर के लिए ईश्वर का भजन करना चाहिए ।

जप-ध्यान से भी यदि नश्वर ही चाहा तो फिर शाश्वत् के लिए कब समय निकालोगे ?

महाभारत में एक बात आती है कि पाँच पाण्डवों सहित द्रौपदी जब वन में विचरण कर रही थी तब एक शाम को युधिष्ठिर महाराज पर्वतों की हारमाला की ओर निहारते हुए, शांति एवं आनंद का अनुभव करते हुए प्रसन्नमुख नजर आ रहे थे । द्रौपदी के मन में आया : 'महाराज युधिष्ठिर संध्या करते हैं, ध्यान-भजन करते हैं, भगवान का सुमिरण-चिंतन करते हैं फिर भी हम दुःखी हैं... वन में दर-दर की ठोकरें खा रहे हैं और दुष्ट दुर्योधन को कोई कष्ट नहीं ?' अतः उसने महाराज युधिष्ठिर से पूछा :

''महाराज ! आप भजन कर रहे हैं, धर्म का अनुष्ठान कर रहे हैं, सच्चाई से चल रहे हैं और दुःख भोग रहे हैं जबकि वह दुष्ट दुर्योधन कपट करके, जुआ खेलकर भी सुखी है । यह कैसी बात है ? आप भजन करते हैं तो भगवान से क्यों नहीं कहते कि हमें न्याय मिले ?''

युधिष्ठिर महाराज ने बड़ा गजब का जवाब दिया है जो भारतीय संस्कृति के गौरव का एक ज्वलंत उदाहरण है । युधिष्ठिर ने कहा :

''दौपदी ! उसके पास कपट से वैभव और सुख है । वैभव और सुख बाहर से दिखता है किन्तु वह भीतर से सुखी नहीं, वरन् अशांत है । जबकि हमारे पास बाहर की सुविधाएँ नहीं हैं फिर भी हमारे चित्त का सुख नहीं मिटता । मैं भजन इसलिए नहीं करता हूँ कि मुझे सुविधाएँ मिलें अथवा मेरे शत्रु का नाश हो जाए वरन् मैं भजन के लिए भजन करता हूँ । उस सुखस्वरूप, आनंदस्वरूप, चैतन्यघन से क्या माँगना ?''

भजन के लिए भजन तभी होगा जब भगवान से कुछ न माँगा जाये । 'जो आयेगा देखा जायेगा.. जो आयेगा सह लेंगे... जो आयेगा गुजर जायेगा...' इस भाव से भजन करें तभी भगवान के लिए भजन होगा अन्यथा, 'यह हो जाये... वह हो जाये...' इस भाव से किया गया भजन भगवान के लिए नहीं होगा । भगवान से कुछ माँगने के लिए भजन करना तो भगवान को नौकर बनाने के लिए भजन करना है ।

''द्रौपदी ! उसके पास कपट से वैभव और सुख है किन्तु वह भीतर से सुखी नहीं, वरन् अशांत है । मैं भजन इसलिए नहीं करता हूँ कि मुझे सुविधाएँ मिलें अथवा मेरे शत्रु का नाश हो जाए वरन् मैं भजन के लिए भजन करता हूँ ।''

भजन प्रेमपूर्वक किया जाये, अहोभाव से किया जाये, भगवान को अपना और अपने को भगवान का मानकर भजन किया जाये, निष्काम होकर किया जाये तभी भजन, भजन के लिए होगा अन्यथा मात्र दुकानदारी ही रह जायेगा ।

अत: सावधान ! समय बहुत कम है । भजन ही करें, व्यापार नहीं, दुकानदारी नहीं । कहीं यह अनमोल मनुष्य जन्म यूँ ही व्यर्थ न बीत जाए...

भगवान से कुछ माँगने के लिए भजन करना तो भगवान को नौकर बनाने के लिए भजन करना है ।

पयाहारी बाबा एक बार घूमते-घामते जयमल के राज्य में आये । उस समय जयमल खड़े-खड़े अपना महल बनवा रहा था । महल बनवाने में पानी की जरूरत पड़ती है । पानी भरनेवाला एक पखाली पाड़े पर तालाब से पानी ले जाता था ।

पयाहारी बाबा तालाब के किनारे जा बैठे थे । उन्हें पता चला कि यह राजा का पखाली है अत: उन्होंने कहा :

''तुम्हारे राजा से कहना कि एक साधु आये हैं । उनके लिए पावभर दूध सुबह और पावभर दूध शाम को यहाँ भेज दिया करे ।''

आप किसी व्यक्ति की सेवा करते हो तो जरूरी नहीं है कि वही व्यक्ति उन्हीं हाथों से आपकी सेवा का बदला दे । भगवान के अनंत-अनंत हाथ हैं, अनंत-अनंत हृदय हैं । आप जो देते हैं, वह अनंत गुना पाते हैं ।

जयमल को पता ही न था संत-सेवा की महिमा का, अत: पखाली के कहने पर जयमल के अहं को चोट लगी । वह ठहाका मारकर हँसा ।

अहंकार कहीं झुकना नहीं चाहता, अहंकार मजाक उड़ाना चाहता है । यह सुविदित सत्य है कि आप जो देते हो वही पाते हो । आप जो चाहते हो वही दो तो वह अनंतगुना होकर आपको मिलता है । आप अपमान चाहते हो तो दूसरों का अपमान करो । फिर आप देखोगे कि 'होलसेल' में अपमान मिल रहा है । अगर आप धोखा चाहते हो तो दूसरों को धोखा दो । आपको खूब धोखा मिलेगा । अगर आप अशांति चाहते हो तो दूसरों को अशांति पहुँचाओ । आपको खूब अशांति मिलेगी । आप अशांति दोगे किसीको और मिलेगी किसी और से, किन्तु मिलेगी जरूर ।

ईश्वर के केवल दो ही हाथ नहीं हैं । आप किसी व्यक्ति की सेवा करते हो तो जरूरी नहीं है कि वही व्यक्ति उन्हीं हाथों से तुम्हारी सेवा का बदला दे । भगवान के अनंत-अनंत हाथ हैं, अनंत-अनंत हृदय हैं । अनंत-अनंत हृदयों के द्वारा वह सेवा कर देता है । आप जो देते हैं, वह अनंतगुना पाते हैं ।

सूरत में एक संत-महापुरुष किसी भक्त के अतिथि हुए थे जिसके यहाँ दो-चार भैंसें बँधी थीं । एक और भैंस का दूध रखा हुआ था, जिसे देखकर संत ने पूछा :

''वह क्या है ?''

भक्त : ''भैंस का दूध है ।''

संत : ''लाओ ।''

भक्त ने बड़े प्रेम से दूध दिया और संत प्रेम

से वहीं पर दूध छींटने लगे । भक्त की तो श्रद्धा थी अत: उसने कुछ नहीं कहा किन्तु बेटों को हुआ कि 'साधु बाबा के चक्कर में आकर पिता ने पूरा दूध छिंटवा दिया ! यह कोई रीत है ?'

पिता बोला : ''तुम लोगों को कुछ समझ में नहीं आयेगा, जाने दो । क्या हुआ ? १०-१२ सेर दूध ही तो गया ! वह भी गुरुजी की सेवा में ही तो लगा है !''

''पखाली ! महाराज को बोलना कि पाड़ा दुहकर जितना भी दूध निकले वह रोज ले लिया करें... जयमल ने ऐसा कहा है ।''

दूसरे-तीसरे दिन भी संत ने दूध लेकर छींट दिया । बेटे परेशान हो गये तब भक्त ने हाथ जोड़कर श्रद्धा-भक्तिपूर्वक संत से पूछा :

''गुरुजी ! यह क्या कर रहे हैं ?''

संत : ''दूध बोता हूँ ।''

पयाहारी बाबा आ गये अपनी यौगिक मस्ती में । संकल्प करके पानी छींटा, हाथ घुमाया और वह पाड़ा भैंस बन गया ।

वे महापुरुष तो चल दिये लेकिन वहाँ भैंसें खड़ी करने पर इतना दूध आता कि समय पाकर वही जगह 'भैंसों का तबेला' नाम से प्रसिद्ध हो गयी ।

जब जड़ वस्तु फेंकते हो तो वह अनंतगुनी होकर आती है तो चेतन विचार फेंकने पर भी अनंतगुने होकर आयेंगे ही, इसमें कोई संदेह नहीं है ।

शक्कर खिला शक्कर मिले ।
टक्कर खिला टक्कर मिले ॥
यह कलजुग नहीं करजुग है ।
इक हाथ ले इक हाथ दे ॥
जो औरों को डाले चक्कर में ।
वह खुद भी चक्कर खाता है ॥
औरों को देता शक्कर जो ।
वह खुद भी शक्कर पाता है ॥

...किन्तु जयमल को तो इन सब बातों का पता ही नहीं था । अत: वह हँसकर अपने मंत्री से बोला : ''आजकल साधु-बाबाओं का दिमाग भी आसमान में है । राजा को कहलाकर भेजा कि पावभर दूध सुबह-शाम भेजना !'' फिर पखाली से बोला :

''पखाली ! महाराज को बोलना कि पाड़ा दुहकर जितना भी दूध निकले वह रोज ले लिया करें... जयमल ने ऐसा कहा है ।''

पखाली ने जाकर राजा का संदेश सुना दिया पयाहारी बाबा को । पयाहारी बाबा आ गये अपनी यौगिक मस्ती में । संकल्प करके पखाली के पाड़े पर पानी छींटा, हाथ घुमाया और वह पाड़ा भैंस बन गया । उसके थन दूध से भर गये । यह देखकर पखाली बाबा के चरणों में गिर पड़ा ।

पखाली पानी भरकर पाड़े को ले जाने लगा तो उसके थनों से दूध टपक रहा था । वह रास्ते चलते लोगों को भी यह चमत्कार बताने लगा : ''देखो देखो... बाबा ने यह कैसा जादू कर दिया !''

जब जयमल ने देखा तो उसे हुआ कि 'धत् तेरे की ! लोगों का शोषण करके फिर हम मजा लेना चाहते हैं किन्तु इनका तो संकल्प मात्र ही प्रकृति में परिवर्तन कर देता है !'

जयमल आया और पयाहारी बाबा के चरणों में गिरता हुआ बोला :

''महाराज ! क्षमा करें । यह सब कैसे होता है, बताने की कृपा करें ।''

पयाहारी बाबा : ''हरि अनंत हैं । हरि की शक्ति अनंत है । वही अनंत शक्तिमान ब्रह्माण्डनायक हरि तेरा अंतरात्मा बनकर बैठा है, मूर्ख ! इस महल को बना-बनाकर फिर छोड़कर मरेगा । इससे तो तू हृदय के महल को बना ताकि तेरा परलोक सुधर जाये । इन परिस्थितियों का सुख तू कब तक लेगा ? चापलूसों की खुशामद का सुख तू कब तक लेगा ? मूर्ख ! तू दिखता तो बाहर से राजा है किन्तु भीतर से महा कंगाल है...''

जयमल का हृदय बदल गया । पुन: चरणों में गिरकर बोला :

''फिर सुख कैसे मिलेगा ?''

पयाहारी बाबा : ''जो सुखस्वरूप श्रीहरि हैं उनकी

पूजा-उपासना और भजन करना सीख ।''

जयमल ने प्रार्थना करके थोड़ी-बहुत पूजा की विधि सीख ली और अपने महल के ऊपर एक सुंदर कक्ष बनवाया । जयमल ने श्रीहरि का पूजाकक्ष सात्त्विक ढंग से सजाया और उसमें ऐसी सीढ़ी रखी जिससे केवल वही जा सके । बाद में सीढ़ी उठाकर रख दी जाये । अपने सेवकों को सख्त आदेश दे दिया कि 'उसके सिवाय यदि कोई उस सीढ़ी का उपयोग करके ऊपर के कक्ष में जायेगा तो उसे कठोर दंड दिया जायेगा ।'

तुम जो देते हो वह जरूर उस अन्तर्यामी ईश्वर तक पहुँचता ही है । जब तुम्हारी देखने की आँखें खुल जायेंगी तब तुम्हें दिखेगा भी सही ।

उस कक्ष में भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति की प्राणप्रतिष्ठा करके जयमल रोज उसकी पूजा करता और गुरुमंत्र का जप करता । इस प्रकार दिन बीत चले ।

आसक्ति कभी जीर्ण होनेवाली नहीं है किन्तु वही आसक्ति संत महापुरुषों के चरणों में और उनके वचनों में हो जाये तो वही आसक्ति मुक्ति देनेवाली है ।

एक दिन जयमल थका हुआ था अत: रात्रि में जल्दी से नीचे के कमरे में आकर सो गया । तब उसकी पत्नी को हुआ : 'देखा जाये, ऊपर क्या है ? ये रोज आकर पूजा करते हैं, भोग चढ़ाते हैं और सबको प्रसाद बाँटते हैं । आजकल बड़े भक्त हो गये हैं तो किस प्रकार सेवा-पूजा करते हैं ?'

पत्नी ने धीरे-से सीढ़ी उठाकर रखी और धीरे-धीरे कमरे में गयी । वहाँ जाकर क्या देखती है कि जयमल जिनकी रोज पूजा करते हैं वे ही ठाकुरजी एक तेजोमय पुरुष के रूप में शैया पर विश्रान्ति कर रहे हैं ! जयमल की पत्नी दंग रह गयी कि 'मैं क्या देख रही हूँ !'

पत्नी ने धीरे-से सीढ़ी उठाकर रखी और धीरे-धीरे कमरे में गयी । वहाँ जाकर क्या देखती है कि जयमल जिनकी रोज पूजा करते हैं वे ही ठाकुरजी एक तेजोमय पुरुष के रूप में शैया पर विश्रान्ति कर रहे हैं ! जयमल की पत्नी दंग रह गयी कि 'मैं क्या देख रही हूँ !'

उसका शरीर पुलकित हो उठा, हृदय रोमांचित और आनंद-माधुर्य से परिपूर्ण हो उठा तथा नेत्रों से प्रेमाश्रु बरस पड़े । वह ज्यादा वहाँ रह न सकी क्योंकि जयमल के स्वभाव से अच्छी तरह परिचित थी । अत: श्रीहरि को प्रणाम करके धीरे-धीरे सीढ़ी उतरने लगी । ज्यों-ही आखिरी सीढ़ी से जरा जोर से कूदी त्यों-ही गहनों की आवाज सुनकर जयमल की नींद टूट गयी । सीढ़ी लगी देखकर वह पत्नी को डाँटने लगा : ''क्यों गयी थी ऊपर ?''

तब पत्नी ने कहा : ''चाहे आप मुझे प्राणदण्ड दे दें किन्तु अब मुझे कोई डर नहीं है ।''

जयमल : ''तुम्हें मेरे से डर नहीं लगता ?''

पत्नी : ''जब डरती थी तब डरती थी किन्तु आज मुझे डर नहीं लग रहा है । पतिदेव ! मैं आपकी अवज्ञा करके चुपके-से ऊपर गयी और वहाँ क्या देखा कि जिनकी आप पूजा करते हैं वे ही भगवान मानो साकार होकर आपके पूजाकक्ष की शैया पर शयन कर रहे हैं...''

जयमल को पत्नी के हाव-भाव और मुखमुद्रा देखकर हुआ कि सचमुच ही इसने साकार विग्रह के दर्शन किये हैं । अत: वह तुरंत सीढ़ी से चढ़कर पूजाकक्ष में गया किन्तु उसे कुछ भी दिखाई न पड़ा । वहाँ ठाकुरजी को न पाकर भी उसने उस शैया को प्रणाम किया और कहा :

''प्रभु ! अभी मेरे चित्त में दोष हैं । मेरे कषाय अभी परिपक्व नहीं हुए हैं । मैंने अनेकों का शोषण किया है और विलासी जीवन जिया है इसीलिए मेरा भक्तियोग सफल नहीं हुआ । फिर भी गुरुकृपा से आप आते तो हो । पत्नी का निर्दोष हृदय है अत: उसे दीदार दिया ।

(शेष पृष्ठ ६ ऊपर)

'मैं सोना बनाना जानता हूँ...'

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

राजा तेजबहादुर एक पूर्णिमा की संध्या को सैर करने के लिए काफी दूर निकल गया । वहाँ उसने एक झोंपड़ी में एक महा कंगाल को देखा, जिसके पास संपत्ति के नाम पर मात्र फटी गुदड़ी और टाट का टुकड़ा था ।

राजा घोड़े से उतरा और सोचने लगा कि मेरे राज्य में सब सुखी हैं और मेरे राज्य के जंगल में ही यह इतना कंगाल ! सोचते-सोचते वह गया उस झोंपड़ी के पास और बोला :

''ऐ भिखारी ! बाहर आ जाओ ।'' भिखारी के वेश में छुपे दरवेश ने राजा से कहा : ''ऐ भिखारी ! तुम भीतर आ जाओ ।''

राजा को और आश्चर्य हुआ : 'मैं मुकुट और अलंकारों से सजा हुआ हूँ और मुझे यह 'भिखारी' कह रहा है !' कौतूहलवश राजा तेजबहादुर अंदर गया । भीतर जाकर देखा तो वह फकीर फटे टाट पर बैठा हुआ था किन्तु उसके नेत्रों में चमक थी ।

राजा बोला : ''मेरे राज्य में तुम रहते हो, इस बात का मुझे पता नहीं था इसलिए तुम नाराज मत होना । यह लो अंगूठी । कल बाजार जाकर सीधा-सामान और अन्य जरूरत की चीजें ले आना । फिर भी यदि पैसे कम पड़ें तो मेरे पास आ जाना । राज्य की ओर से तुम्हें और भी मदद दे दी जायेगी । तुम आराम से रहो ।''

दरवेश : ''मैं बहुत आराम से रहता हूँ । यह अंगूठी किसी कंगाल को दे देना ।''

''आप से बढ़कर कोई कंगाल...!''

''हाँ, मेरे से बढ़कर कई कंगाल मिलेंगे ।''

''महाराज ! आपकी अवस्था तो देखिए ! झोंपड़ी में दीया नहीं जलाना पड़े इसलिए चाँद की चाँदनी ऊपर से ही ले रहे हो । फूटी कौड़ी तक आपके पास नहीं दिख रही । आप से बढ़कर दूसरा कंगाल कहाँ से लाऊँगा ?''

''राजन् ! मैं तो सोना बनाना जानता हूँ । मुझे कंगाल कैसे कहते हो ? अपने ये शब्द तुम्हें वापस लेने पड़ेंगे ।'' दरवेश ने अधिकारपूर्ण शब्दों में कह दिया राजा से ।

योग करके मन के ऊपर जिसका अधिकार हो जाता है, उसका अधिकार फिर हजारों-लाखों पर चलने लगता है । उसकी अधिकारपूर्ण वाणी राजा के दिल पर गहरी असर कर गयी । वह सिकुड़ गया और बोला :

''महाराज ! आप सोना बनाना जानते हैं ! अगर आप मुझे सोना बनाना सिखा दें तो मैं अपने राज्य का विस्तार कर सकूँगा और आपको भी लोग दुआएँ देंगे । मैं आपके चरणों का दास हूँ । यदि आप उचित समझें तो यह विद्या इस दास को सिखाने की कृपा कीजिए ।''

> *''राजन् ! मैं तो सोना बनाना जानता हूँ । मुझे कंगाल कैसे कहते हो ? अपने ये शब्द तुम्हें वापस लेने पड़ेंगे ।''*

महाराज : ''ठीक है, हम सोना बनाना जानते हैं लेकिन रास्ते जाते यात्रियों को यह विद्या नहीं सिखा पायेंगे । तुम्हें थोड़े दिन इधर आना पड़ेगा । फिर हम देखेंगे, यदि तुम पात्र होंगे तो तुम्हें सिखा देंगे ।''

तेजबहादुर : ''जैसा आप कहें, मैं वैसा करने के लिए तैयार हूँ ।''

महाराज : ''ठीक है । कल सुबह से यहाँ रोज आते रहना और अकेले आना ।''

राजा गया प्रणाम करके और दूसरे दिन से रोज सुबह में आने लगा ।

एक दिन महाराज ने कहा : ''सूर्योदय हुआ

है, राजन् ! सोना बनाने की प्रक्रिया सीखने में थोड़ी योग्यता भी तो चाहिए । थोड़े लम्बे श्वास लो और छोड़ो ।''

इस प्रकार उसे प्राणायाम सिखा दिया, जप सिखा दिया और धीरे-धीरे संप्रेक्षण शक्ति बरसा दी । राजा की सोयी हुई कुण्डलिनी शक्ति जागी । अब तो कभी रुदन कभी हास्य, कभी रोमांच... इस प्रकार अष्ट सात्त्विक भावों का उदय होने लगा । वह सोना बनाने की बात भूल गया और महाराज के पास आने की उसकी रुचि बढ़ती गयी । वह ध्यान की ऊँचाइयों को छूने लगा ।

उसे प्राणायाम, जप सिखा दिया और संप्रेक्षण शक्ति बरसा दी । राजा की सोयी हुई कुण्डलिनी शक्ति जागी । कभी रुदन, कभी हास्य, कभी रोमांच... वह सोना बनाने की बात भूल गया ।

एक दिन समय पाकर महाराज ने पूछा :

''राजन् ! तुम सोना बनाना सीखना चाहते थे न ? मैं तो सोना बनाना नहीं जानता हूँ लेकिन देहाध्यास एवं विषय-विकारों में पड़े हुए जीव को ब्रह्म बनाना जानता हूँ । उसी रास्ते पर तुझे भी रख दिया है । बोलो, तुम्हारा क्या ख्याल है ?''

राजा : ''महाराज ! अगर आप पहले बोलते कि 'आओ... ध्यान-भजन करो' तो मैं नहीं आता लेकिन सोना बनाने की लालच ने मुझे आपके सान्निध्य में ला दिया । अगर मैं सोना बनाना सीख जाता तो राज्य का विस्तार करने एवं और अधिक सोना बनाने के लोभ में और अधिक अशांत हो जाता । किन्तु महाराज ! आपने तो मेरी भक्ति बढ़ा दी, मेरा ध्यान बढ़ा दिया, मेरे भगवत्प्रेम बढ़ा दिया । आपके श्रीचरणों में मेरा बारम्बार प्रणाम हैं !''

जो योग करता है, संत-महापुरुषों के श्रीचरणों में जाता है, उनके द्वारा बताये साधन-भजन में लग जाता है, वह स्वयं तो तरता है, दूसरों को भी तारता है ।

जो योग करता है, संत-महापुरुषों के श्रीचरणों में जाता है, उनके द्वारा बताये साधन-भजन में लग जाता है, वह स्वयं तो तरता है, दूसरों को भी तारता है ।

स: तृप्तो भवति स: अमृतो भवति ।
स: तरति लोकान् तारयति ॥

❀

'सुनहु भरत भावी प्रबल...'

तीन प्रकार के प्रारब्ध होते हैं : (१) मंद प्रारब्ध (२) तीव्र प्रारब्ध (३) तरतीव्र प्रारब्ध

मंद प्रारब्ध को तो आप वैदिक पुरुषार्थ से बदल सकते हैं, तीव्र प्रारब्ध आपके पुरुषार्थ एवं संतों-महापुरुषों की कृपा से टल सकता है लेकिन तरतीव्र प्रारब्ध में जो होता है वह तो होकर ही रहता है ।

एक बार रावण कहीं जा रहा था । रस्ते में उसे विधाता मिले । रावण ने उन्हें ठीक से पहचान लिया । उसने पूछा :

''हे विधाता ! आप कहाँ से पधार रहे हैं ?''

''मैं कोशल देश गया था ।''

''क्यों ? कोशलदेश में क्या बात है ?''

''कौशल-नरेश के वहाँ बेटी का जन्म हुआ है । मैं उसका भाग्य लिखने गया था ।''

''अच्छा ! उसके भाग्य में आपने क्या लिखा ?''

''उस कोशल-नरेश की बेटी कौशल्या का भाग्य बहुत अच्छा है । उसकी शादी राजा दशरथ के साथ होगी । उसके घर स्वयं भगवान बालक राम का रूप लेकर जन्म लेंगे और उन्हीं राम के साथ तुम्हारा युद्ध होगा । वे तुम्हें यमपुरी पहुँचाएँगे ।''

''हूँऽऽऽ... विधाता ! तुम्हारा बुढ़ापा आ रहा है । लगता हैं तुम सठिया गये हो । अरे ! जो कौशल्या अभी-अभी पैदा हुई और दशरथ...! नन्हा-मुन्ना लड़का ! वे बड़े होंगे, उनकी शादी होगी, उनको बच्चा होगा फिर वह बच्चा जब बड़ा होगा तब युद्ध करने आएगा । वह मनुष्य का बालक मुझ जैसे महाप्रतापी रावण से युद्ध करेगा... ! हूँऽऽऽ...!''

रावण बाहर से तो डींग हाँकता हुआ चला गया परंतु भीतर चोट लग गई ।

समय बीतता गया । रावण इन बातों को ख्याल में रखकर सब जाँच-पड़ताल करवाता रहता था । कौशल्या सगाई के योग्य हो गयी है तो सगाई हुई कि नहीं ? फिर देखा कि समय आने पर कौशल्या की सगाई दशरथ के साथ ही हुई । उसको एक झटका-सा लगा परंतु अपने-आपको समझाने लगा कि सगाई हुई तो इसमें क्या ? अभी तो शादी हो... उनको बेटा हो... बेटा बड़ा हो तब की बात है । ...और वह मुझे क्या यमपुरी पहुँचाएगा ?''

मंद प्रारब्ध को तो आप वैदिक पुरुषार्थ से बदल सकते हैं, तीव्र प्रारब्ध आपके पुरुषार्थ एवं संतों-महापुरुषों की कृपा से टल सकता है लेकिन तरतीव्र प्रारब्ध में जो होता है वह तो होकर ही रहता है ।

रोग और शत्रु की अवगणना नहीं करनी चाहिए, उस पर नजर रखनी चाहिए । अतः रावण उनकी पूरी खबर रखता था ।

रोग और शत्रु की अवगणना नहीं करनी चाहिए । उस पर नजर रखनी चाहिए ।

रावण ने देखा : 'कौशल्या की सगाई दशरथ के साथ हो गई है । अब मुसीबत शुरू हो गई है अतः मुझे सावधान रहना चाहिए । जब शादी की तिथि तय हो जाएगी, उस वक्त देखेंगे ।' समय पाकर शादी की तिथि तय हो गई और शादी का दिन नजदीक आ गया ।

रावण ने कौशल्या का हरण कर लिया और उसे लकड़े के बक्से में बन्द करके वह बक्सा पानी में बहा दिया ।

रावण ने सोचा कि अब कुछ करना पड़ेगा । अतः उसने अपनी अदृश्य विद्या का प्रयोग करने का विचार किया । जिस दिन शादी थी उस दिन कौशल्या स्नान आदि करके बैठी थी और सहेलियाँ उसे हार-शृंगार से सजा रही थीं । उस वक्त अवसर पाकर रावण ने कौशल्या का हरण कर लिया और उसे लकड़े के बक्से में बन्द करके वह बक्सा पानी में बहा दिया ।

पिता के आगे और गुरु के आगे संकोच छोड़कर अपना अभीष्ट और अपनी व्यथा बता देनी चाहिए ।

इधर कौशल्या के साथ शादी करवाने के लिये दुल्हा दशरथ को लेकर राजा अज गुरु वशिष्ठ तथा बारातियों के साथ कौशल देश की ओर निकल पड़े थे । एकाएक दशरथ और वशिष्ठजी के हाथी चिंघाड़कर भागने लगे । महावतों की लाख कोशिशों के बावजूद भी वे रुकने का नाम नहीं ले रहे थे । तब वशिष्ठजी ने कहा :

''छोड़ो, हाथी जहाँ जाना चाहते हों जाने दो । उनके प्रेरक भी तो परमात्मा हैं ।''

हाथी दौड़ते-भागते वहीं पहुँच गये जहाँ पानी में बहते हुए लकड़े का बक्सा किनारे आ गया था । बक्सा देखकर सब चकित हो गये । उसे खोलकर देखा तो अंदर से हार-शृंगार से सजी एक कन्या निकली जो बड़ी लज्जित होती हुई सिर नीचा करके खड़ी-खड़ी अपने पैर के अंगूठे से धरती कुरेदने लगी ।

वशिष्ठजी ने कहा : ''मैं वशिष्ठ ब्राह्मण हूँ । पुत्री ! पिता के आगे और गुरु के आगे संकोच छोड़कर अपना अभीष्ट और अपनी व्यथा बता देनी चाहिए । तू कौन है और तेरी ऐसी स्थिति कैसे हुई ?''

उसने जवाब दिया : ''मैं कोशल देश के राजा की पुत्री कौशल्या हूँ ।''

वशिष्ठजी समझ गये । आज तो शादी की तिथि है और शादी का समय भी नजदीक आ रहा है ।

कौशल्या ने बताया : ''कोई असुर मुझे उठाकर ले गया, फिर लकड़े के बक्से में डालकर मुझे बहा दिया । अब मुझे

कुछ पता नहीं चल रहा है कि मैं कहाँ हूँ ।''

वशिष्ठजी ने कहा : ''बेटी ! फिकर मत कर । तरतीव्र प्रारब्ध में तो जैसा लिखा होता है वैसा ही होकर रहता है । देख, मैं वशिष्ठ ब्राह्मण हूँ । ये दशरथ हैं और तू कौशल्या है । अभी शादी का मुहूर्त भी है । मैं अभी यहीं पर तुम्हारा गांधर्व विवाह करा देता हूँ ।''

ऐसा कहकर महर्षि वशिष्ठजी ने वहीं दशरथ-कौशल्या की शादी करवा दी ।

तरतीव्र प्रारब्ध जैसा होता है वह तो होकर ही रहता है । किन्तु इसका यह अर्थ भी नहीं कि हाथ-पर-हाथ डालकर बैठ जायें । पुरुषार्थ तो करना ही चाहिए । बिना पुरुषार्थ के तो कोई भी कार्य सिद्ध होना संभव ही नहीं है ।

उधर कोशल-नरेश कौशल्या को न देखकर चिंतित हो गये कि 'बारात आने का समय हो गया है, क्या करूँ ? सबको क्या जवाब दूँगा ? अगर यह बात फ़ैल गई कि कन्या का अपहरण हो गया है तो हमारे कुल को कलंक लग जाएगा कि सजी-धजी दुल्हन अचानक कहाँ और कैसे गायब हो गई ?'

''कौशल्या की जगह पर तू तैयार होकर कौशल्या बन जा । हमारी भी इज्जत बच जाएगी और तेरी भी जिंदगी सुधर जाएगी ।''

अपनी इज्जत बचाने के लिये राजा ने कौशल्या की चाकरी में रहनेवाली एक दासी को बुलाया । वह करीब कौशल्या की उम्र की थी और उसका रूप-लावण्य भी ठीक था । उसे बुलाकर समझाया कि : ''कौशल्या की जगह पर तू तैयार होकर कौशल्या बन जा । हमारी भी इज्जत बच जाएगी और तेरी भी जिंदगी सुधर जाएगी ।'' कुछ दासियों ने मिलकर उसे सजा दिया । बालों में तेल-फूलेल डालकर बाल बना दिये । वह तो मन-ही-मन खुश हो रही थी कि : 'अब मैं महारानी बनूँगी ।'

इधर दशरथ-कौशल्या की शादी के संपन्न हो जाने के बाद सब कोशल देश की ओर चल पड़े । बारात के कोशल देश पहुँचने पर सबको इस बात का पता चल गया कि कौशल्या की शादी दशरथ के साथ हो चुकी है । सब प्रसन्न हो उठे । जिस दासी को सजा-धजाकर बिठाया गया था वह तो ठनठनपाल ही रह गई । तबसे कहावत चली :

बिधि का घाल्या न टले, टले रावण को खेल ।
रही बिचारी दूमड़ी घाल पटा में तेल ॥

'बिधि' माना प्रारब्ध । प्रारब्ध में उसको रानी बनना नहीं था, इसलिए सज-धजकर, बालों में तेल डालकर भी वह कुँआरी ही रह गयी ।

अतः मनुष्य को चाहिए कि चिन्ता नहीं करे क्योंकि तरतीव्र प्रारब्ध जैसा होता है वह तो होकर ही रहता है । किन्तु इसका यह अर्थ भी नहीं है कि हाथ-पर-हाथ डालकर बैठ जाये । पुरुषार्थ तो करना ही चाहिए । बिना पुरुषार्थ के तो कोई भी कार्य सिद्ध होना संभव ही नहीं है । तत्परता से, मनोयोग से, विचारपूर्वक कार्य हुआ हो फिर भी यदि विफलता मिलती है तो उसे विधि का विधान मानकर सहजता से स्वीकार करो, दुःखी होकर नहीं ।

'श्रीरामचरितमानस' (अयोध्याकाण्ड : १७१) में तुलसीदासजी ने विधि की बात बताते हुए कहा है :

सुनहु भरत भावी प्रबल बिलखि कहेउ मुनिनाथ ।
हानि लाभु जीवनु मरनु जसु अपजसु बिधि हाथ ॥

पू. बापू के आगामी सत्संग-कार्यक्रम

(१) रायपुर (मध्य प्रदेश) में : १९ से २३ फरवरी ९७. बी. आई. टी. ग्राउन्ड, शंकरनगर । फोन : ४२४५१४ (२) नागपुर (महा.) में : २६ फरवरी से २ मार्च । फोन : ६४२१४९, ७६६७२६, ७६०१५३, ५४१२४९. (३) उज्जैन में महाशिवरात्रि ध्यान योग शिविर : ६ से ९ मार्च संत श्री आसारामजी गुरुकुल न्यास, सांदीपनि आश्रम के पास, मंगलनाथ रोड़ । फोन : ५५५५५२, ५५७८१७, ५६१२८९. (४) खरगोन (म.प्र.) में ११ और १२ मार्च (८ से १० मार्च श्री सुरेशानंदजी का सत्संग)

ईश्वर की विचित्र सृष्टि

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

भगवान की यह दुनिया बड़ी विचित्र है । इसे समझ पाना वैज्ञानिकों के लिए भी बड़ा कठिन हो रहा है ।

फ्राँस के मोमिन्स नगर में एक बालक, जिसका नाम है वार्डिस, उसकी एक आँख भूरी है और दूसरी नीली । वैज्ञानिक भी आश्चर्यचकित हैं कि यह कैसे संभव हुआ ?

१८२९ में लंदन का एक बालक चार्ल्स वर्थ जब ४ साल का हुआ तभी उसे दाढ़ी-मूछ उग आयी । इतना ही नहीं उसका व्यवहार और बुद्धि भी बड़े मनुष्य जैसी ही थी । सात साल की उम्र में उसके बाल सफेद हो गये और आठवें साल का प्रारंभ होने पर वह मर गया । अभी तक वैज्ञानिकों की बुद्धि में यह बात समझ में नहीं आ रही है कि यह हुआ कैसे ?

फ्राँस में टुर कुईंग नामक नगर में एक ऐसी बालिका का जन्म हुआ, जिसकी सामान्य मनुष्य की तरह दो आँखें नहीं, वरन् जहाँ तिलक करते हैं आज्ञाचक्र में, वहाँ एक आँख है । सब हैरान हो रहे हैं कि एक आँख कैसे ? वह भी आज्ञाचक्र में !

सुमात्रा में एक ऐसा कुँआ है, जिसमें झाँकने पर दो प्रतिबिंब दिखते हैं । वास्तव में दिखना तो चाहिए एक, किन्तु दो दिखते हैं । उसमें भी एक अपना प्रतिबिंब दिखता है दूसरा किसी अन्य का... तो क्या दो व्यक्ति होते हैं ? नहीं, एक ही व्यक्ति के दो प्रतिबिंब दिखते हैं । यदि दो व्यक्ति झाँकेंगे तो ४ प्रतिबिंब दिखेंगे और तीन व्यक्ति झाँकेंगे तो ६ प्रतिबिंब दिखेंगे, वह भी दर्पण की तरह बिल्कुल स्पष्ट । हालाँकि नीचे कोई दर्पण नहीं लगा हुआ है ।

फ्राँस के लेटले नामक स्थल पर एक बार एक किसान के खेत में विद्युत गिरने से उसकी भेड़ों में से सब काली भेड़ें मर गयीं किन्तु सफेद भेड़ों का बाल तक बाँका नहीं हुआ ।

अमेरिका की एडिस्टन लाइब्रेरी में सन् १९६१ से वॉयलिन की ध्वनि सुनायी दे रही है । कई लोग जा-जाकर सुनकर आये हैं । वॉयलिन की ध्वनि जरूर सुनायी देती है किन्तु कौन बजाता है यह नहीं दिखता ।

कुछ समय पहले की बात है : भारत के मैसूर में एक दुष्ट राजा राज्य करता था । एक बार उसने किसी साधु से कुछ कहा, किन्तु उस साधु ने राजा की बात सुनी-अनसुनी कर दी । इससे कुपित होकर राजा ने साधु को प्राणदंड देने का आदेश कर दिया । प्राणदंड भी किस प्रकार का ? तोप से मार डालने का हुक्म कर दिया गया । इतना दुष्ट था वह राजा !

कुपित होकर राजा ने साधु को प्राणदंड देने का आदेश कर दिया । सैनिकों ने आज्ञा का पालन किया । वे साधु को पकड़कर ले आये और तोप के मुँह पर साधु को बिठाकर तोप दाग दी । साधु उछलकर हाथी के हौदे पर जा पहुँचे ।

सैनिकों ने आज्ञा का पालन किया । वे साधु को पकड़कर ले आये और तोप के मुँह पर उसे बिठाकर तोप दाग दी । साधु उछलकर हाथी के हौदे पर जा पहुँचे । राजा ने दुबारा पकड़कर तोप के मुँह पर बैठाकर तोप चलवायी तो एक ऊँची छत पर साधु जा पहुँचे किन्तु मरे नहीं । राजा और भड़का । उसने तीसरी बार पकड़वाकर तोप चलवायी । तीसरी बार भी साधु एक रेती के टीले पर जा बैठे ।

जा को राखे साईंया मार सके नहीं कोई ।
बाल न बाँका कर सके चाहे जग वैरी होई ॥

अफगानिस्तान में काबुल के पास एक रेतीला

स्थान है जहाँ घोड़ों के दौड़ने की आवाज आती है हालाँकि वहाँ घोड़े दिखते नहीं हैं । इसी प्रकार नगाड़ों के बजने की आवाज भी आती है । लोग छान-बीन करके थक गये किन्तु अभी तक इस निष्कर्ष पर नहीं पहुँच सके कि ये कैसे होता है ?

जो भी देखने में आ रहा है, जानने में आ रहा है, उससे भी कहीं करोड़गुना अधिक विचित्रताएँ हैं किन्तु हमारी इन्द्रियाँ इतनी सक्षम नहीं हैं कि उन्हें जान पायें ।

जो भी जानने में आ रहा है, उससे भी कहीं करोड़गुना अधिक विचित्रताएँ हैं किंतु हमारी इन्द्रियाँ इतनी सक्षम नहीं हैं कि उन्हें जान पायें ।

कैलिफोर्निया में एक बालू के टीले में से रोने की आवाज आती है । बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी उस स्थान पर जाकर आये किन्तु वे भी नहीं जान सके कि आवाज कहाँ से आती है... कैसे आती है ।

हवाई द्वीप में एक टीले से कुत्ते के रोने की आवाज आती है । कोई कह सकता है कि मरकर कोई भूत बना होगा और रो रहा होगा इसलिए आवाज आती है । तो क्या कुत्ता भी मरकर भूत होता है क्या ?

बुद्धि को लड़ा-लड़ाकर, थककर अंत में जब कुछ समझ में नहीं आया, तब आइन्स्टाईन ने कहा : ''मैं ईश्वर को मानता हूँ । इस अविज्ञात सृष्टि में, अविज्ञात अद्भुत रहस्यों में ईश्वर की शक्ति ही परिलक्षित होती है ।''

दक्षिण अफ्रिका की दीवालों से अट्टहास्य की, जोर-जोर से हँसने की आवाज आ रही है । यूरोप के कुछ समुद्र-तट ऐसे हैं, जहाँ मधुर संगीत की आवाज आती है किन्तु गाने-बजानेवाले का कोई पता नहीं ।

बिजनौर के निवासी रामअवतार शर्मा ने पुनर्जन्म का खंडन करते हुए २००० पृष्ठ की किताब लिखी लेकिन उन्हीं के यहाँ ऐसा पुत्र पैदा हुआ जो पुनर्जन्म की बातें बताता था ।

बड़े-बड़े बुद्धिमान लोग भी भगवान की प्रकृति के रहस्य को ही नहीं जान पाते तो भगवान को भला इस बुद्धि से कैसे जाना जा सकता है ?

प्रकृति के रहस्य बड़े अनूठे हैं । कांगड़ा जिले के दादा सिरवा गाँव में एक किसान ने अपनी जमीन को ठीक करने के लिए एक पहाड़ी को खोदना शुरू किया । खोदते-खोदते उसे एक अद्भुत पत्थर मिला । उसकी जाँच करने पर पता चला कि उस पत्थर पर एक चिड़िया अंकित है ।

कोई कहेगा : 'हो सकता है किसीने पहले अपने महल में चिड़िया बनवायी हो और समय पाकर वह महल जमीनदोस्त हो गया हो, फिर खोदने पर वही चिड़िया मिली हो...' किन्तु ऐसा नहीं है ।

प्रकृति के पास भी ऐसी कला है, जिससे चिड़िया बन सके । भगवान कब, कहाँ, कैसे और क्या कर दें यह किसीकी समझ में नहीं आता है ।

बुद्धि को लड़ा-लड़ाकर, थककर अंत में जब कुछ समझ में नहीं आया, तब आईन्स्टाईन ने कहा : ''मैं ईश्वर को मानता हूँ । इस अविज्ञात सृष्टि में, अविज्ञात अद्भुत रहस्यों में ईश्वर की शक्ति ही परिलक्षित होती है ।''

हरबर्ट स्पेन्सर ने कहा : ''जिस शक्ति को मैं बुद्धि से परे मानता हूँ वह धर्म का खंडन नहीं करती अपितु उसे अधिक बल पहुँचाती है ।''

बड़े-बड़े वैज्ञानिक भी ईश्वर की सत्ता को स्वीकार किये बिना नहीं रह सके । उन्होंने भी ईश्वर की सत्ता को माना है लेकिन आजकल जो लोग ईश्वर को नहीं मानते, जो नास्तिकता की ओर बढ़ रहे हैं उनकी सचमुच बड़ी दयनीय स्थिति है ।

बड़े-बड़े बुद्धिमान लोग भी भगवान की प्रकृति के रहस्य को ही नहीं जान पाते तो भगवान को भला इस बुद्धि से कैसे जाना जा सकता है ?

सोइ जानइ जेहि देहु जनाई ।
जानत तुम्हहि तुम्हहि होइ जाई ॥
'यह फल साधन ते न होई...

भगवान को केवल भगवान की कृपा से ही जाना जा सकता है । कोई सोचे कि अपने बलबूते पर भगवान को जान लें कि 'नंगे पैर चलेंगे... इतनी तीर्थयात्रा करेंगे... इतना उपवास करेंगे... हम इतना साधन-भजन करेंगे... इतनी माला घुमायेंगे... हम इतना योग करेंगे... इतने-इतने नियम करके हम भगवान को पा लेंगे...' तो यह बात बड़ी कठिन है । किन्तु यदि हो जाय सद्गुरु-कृपा, ईश्वर-कृपा तो यह कठिन-सा दिखनेवाला काम, असंभव-सा दिखनेवाला काम भी सहज हो जाता है, सरल हो जाता है । जैसे राजा जनक, खट्वांग, परीक्षित, शबरी आदि के जीवन में हुआ ।

भगवान को केवल भगवान की कृपा से ही जाना जा सकता है ।

(पृष्ठ ९ का शेष)

सुख-दुःख की, मान-अपमान की तरंगें आती और जाती हैं लेकिन उनको देखनेवाले तुम वही के वही रहते हो । वही तुम आत्मा हो, चैतन्य हो और आत्मा सदा एकरस है, अबदल है । शरीर और संसार बदलता रहता है । बचपन गया तो जवानी आती है और जवानी चली जाये तो बुढ़ापा आता है । संसार की परिस्थितियाँ भी बदलती रहती हैं लेकिन इन सब बदलाहट को देखनेवाला जो साक्षी है, वह नहीं बदलता है, वही आत्मा है । जो सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय का साक्षी है, महाप्रलय भी हो जाये फिर भी जिसका बाल भी बांका नहीं होता है वही आत्मा है... वही परमात्मा है ।

जो सुख-दुःख में, मान-अपमान में सम रहकर अपने-आप में स्थित रहते हैं वे देर-सबेर आत्मा का साक्षात्कार कर लेते हैं । उनको फिर कुछ करना बाकी नहीं रहता है । वे भगवद्स्वरूप हो जाते हैं । ऐसे महापुरुष ईश्वर से कभी जुदा नहीं होते ।

आप भी यदि ईश्वर के मार्ग पर आगे बढ़ना चाहते हो तो मिथ्या शरीर और संसार को सत्य मानने का भ्रम मिटाना पड़ेगा । यह भ्रम दूर होगा तभी आप सदा के लिये दुःखों से मुक्त हो सकोगे । जैसे स्वप्न के पदार्थों को लेकर कोई जाग नहीं सकता, ऐसे ही जगत् की सत्यता को पकड़कर कोई जगदीश्वर का साक्षात्कार नहीं कर सकता और संसार को सत्य मानने का वह भ्रम सद्गुरु की करुणा-कृपा के बिना नहीं मिटता ।

सद्गुरु मेरा शूरमा करे शब्द की चोट ।
मारे गोला प्रेम का हरे भरम की कोट ॥

❀

पाठकगण, सदस्यों, एजेन्ट बन्धुओं से निवेदन

(१) 'ऋषि प्रसाद' के पाठक इस अंक से रू. २०० जमा करवाकर पाँच साल के लिए भी सदस्य बन सकते हैं । (२) अपनी सदस्यता का नवीनीकरण कराते समय मनीऑर्डर फार्म पर 'संदेश के स्थान' पर 'ऋषि प्रसाद' के लिफाफे पर आया हुआ आपके पते वाला लेबल चिपका दें । (३) 'पाने वाले का पता' में 'ऋषि प्रसाद सदस्यता हेतु' अवश्य लिखें । (४) पते में किसी भी प्रकार के परिवर्तन की सूचना प्रकाशन तिथि से एक माह पूर्व भिजवावें अन्यथा परिवर्तन अगले अंक से प्रभावी होगा । (५) जिन सदस्यों को पोस्ट द्वारा अंक मिलता है उनको विनंती है कि अगर आपको अंक समय पर प्राप्त न हो तो पहले अपनी नजदीकवाली पोस्ट ऑफिस में ही पूछताछ करें । क्योंकि अहमदाबाद कार्यालय से सभी को समय पर ही अंक पोस्ट किये जाते हैं । पोस्ट ऑफिस में तलास करने पर भी अंक न मिले तो उस महीने की २० तारीख के बाद अहमदाबाद कार्यालय को जानकारी दें । (६) 'ऋषि प्रसाद' कार्यालय से पत्रव्यवहार करते समय कार्यालय के पते के ऊपर के स्थान में संबंधित विभाग का नाम अवश्य लिखें । ये विभिन्न विभाग इस प्रकार हैं :

(A) अनुभव, गीत, कविता, भजन, संस्था समाचार, फोटोग्राफ्स एवं अन्य प्रकाशन योग्य सामग्री 'सम्पादक- ऋषि प्रसाद' के पते पर प्रेषित करें । **(B)** पत्रिका न मिलने तथा पते में परिवर्तन हेतु 'व्यवस्थापक-ऋषि प्रसाद' के पते पर संपर्क करें । **(C)** साहित्य, चूर्ण, कैसेट आदि प्राप्ति हेतु 'श्री योग वेदान्त सेवा समिति के पते पर संपर्क करें । **(D)** साधना संबंधी मार्गदर्शन हेतु 'साधक विभाग' पर लिखें । **(E)** स्थानीय समिति की मासिक रिपोर्ट, सत्प्रवृत्ति संचालन की जानकारी एवं समिति से संबंधित समस्त कार्यों के लिये 'अखिल भारतीय योग वेदान्त सेवा समिति' के पते पर लिखें । **(F)** स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्त प्रकार के पत्रव्यवहार 'वैद्यराज, सांई लीलाशाहजी उपचार केन्द्र, संत श्री आसारामजी आश्रम, वरीयाव रोड़, जहाँगीरपुरा, सूरत (गुजरात) के पते पर करें । (७) आप जो राशि भेजें वह इन विभागों के मुताबिक अलग-अलग मनीऑर्डर या ड्राफ्ट से ही भेजें । अलग-अलग विभाग की राशि एक ही मनीऑर्डर या ड्राफ्ट में कभी न भेजें ।

स्वावलंबी बनो

- पूज्यपाद संत श्री आसारामजी बापू

हमारी दिव्य संस्कृति भूलकर हम विदेशी कल्चर के चक्कर में फँस गए हैं । लॉर्ड मैकाले की कूटनीति ने भारत की शक्ति को क्षीण कर दिया है ।

लॉर्ड मैकाले जब भारत देश में घूमा तब उसने देखा कि भारत के संतों के पास ऐसी यौगिक विद्याएँ हैं, ऐसा मंत्रविज्ञान है, ऐसी योग-शक्तियाँ हैं कि यदि भारत का एक नौजवान भी संतों से प्रेरणा पाकर उनके बताये हुए पदचिन्हों पर चल पड़ा तो ब्रिटिश शासन को उखाड़कर फेंक देने में सक्षम हो जायेगा ।

इसलिए लॉर्ड मैकाले ने सर्वप्रथम संस्कृत विद्यालयों और गुरुकुलों को बंद करवाया और अंग्रेजी स्कूलें शुरू करवायीं । हमारे गृहउद्योग बंद करवाये और शुरू करवायीं फैक्टरियाँ ।

पहले लोग स्वावलंबी थे, स्वाधीन होकर जीते थे, उन्हें पराधीन बना दिया गया, नौकर बना दिया गया । धीरे-धीरे करके विदेशी आधुनिक माल भारत में बेचना शुरू कर दिया जिससे लोग अपने काम का आधार यंत्रों पर रखने लगे और प्रजा आलसी, भौतिकवादी बनती गई । इसका फायदा उठाकर ब्रिटिश हम पर शासन करने में सफल हो गये ।

एक दिन एक राजकुमार घोड़े पर सवार होकर घूमने निकला था । उसे बचपन से ही भारतीय संस्कृति के पूर्ण संस्कार मिले थे । नगर से गुजरते वक्त अचानक राजकुमार के हाथों से चाबुक गिर पड़ा । राजकुमार स्वयं घोड़े से नीचे उतरा और चाबुक लेकर पुनः घोड़े पर सवार हो गया । यह देखकर राह पर गुजरते लोगों ने कहा :

''मालिक ! आप तो राजकुमार हो । एक चाबुक के लिये आप स्वयं घोड़े पर से नीचे उतरे ! हमें हुक्म दे देते...''

राजकुमार : ''जरा-जरा काम में यदि दूसरों का मुँह ताकने की आदत पड़ जायेगी तो हम आलसी, पराधीन बन जाएँगे और आलसी पराधीन मनुष्य जीवन में क्या प्रगति कर सकता है ? अभी तो मैं जवान हूँ । मेरे में काम करने की शक्ति है । मुझे स्वावलंबी बनकर दूसरे लोगों की सेवा करनी चाहिए न कि सेवा लेनी चाहिए । यदि आपसे चाबुक उठवाता तो सेवा लेने का बोझा मेरे सिर पर चढ़ता ।''

> *''जरा-जरा काम में यदि दूसरों का मुँह ताकने की आदत पड़ जायेगी तो हम आलसी, पराधीन बन जाएँगे और आलसी, पराधीन मनुष्य जीवन में क्या प्रगति कर सकता है ? अभी तो मैं जवान हूँ । मेरे में काम करने की शक्ति है । मुझे स्वावलंबी बनकर दूसरे लोगों की सेवा करनी चाहिए न कि सेवा लेनी चाहिए ।''*

हे भारत के नौजवानों ! दृढ़ संकल्प करो कि : 'हम स्वावलंबी बनेंगे ।' नौकरों तथा यंत्रों पर कब तक आधार रखोगे ? हे भारत की नारी ! अपनी गरिमा को भूलकर यांत्रिक युग से प्रभावित न हो । श्रीरामचंद्रजी की माता कौशल्यादेवी इतने सारे दास-दासियों के होते हुए भी स्वयं अपने हाथों से अपने पुत्रों के लिये पवित्र भोजन बनाती थीं । तुम भी अपने कर्त्तव्यों से च्युत मत हो । किसीने सच ही कहा है :

स्ववालंबन की एक झलक पर ।
न्यौछावर कुबेर का कोष ॥

❀

वर्ष के दो भाग होते हैं जिसमें पहले भाग आदान काल में सूर्य उत्तर की ओर गति करता है, दूसरे भाग विसर्ग काल में सूर्य दक्षिण की ओर गति करता है। आदान काल में शिशिर, वसन्त एवं ग्रीष्म ऋतुएँ और विसर्ग काल में वर्षा, शरद एवं हेमन्त ऋतुएँ होती हैं। आदान काल के समय सूर्य बलवान और चन्द्र क्षीणबल रहता है।

शिशिर ऋतु उत्तम बलवाली, वसन्त ऋतु मध्यम बलवाली और ग्रीष्म ऋतु दौर्बल्यवाली होती है। विसर्ग काल में चन्द्र बलवान और सूर्य क्षीणबल रहता है। चन्द्र पोषण करनेवाला होता है। वर्षा ऋतु दौर्बल्यवाली, शरद ऋतु मध्यम बल व हेमन्त ऋतु उत्तम बलवाली होती है।

वसन्त ऋतु

शीत ऋतु व ग्रीष्म ऋतु का सन्धिकाल वसन्त ऋतु का होता है। इस समय में न अधिक सर्दी होती है न अधिक गर्मी होती है। इस मौसम में सर्वत्र मनमोहक आमों के बौर से युक्त सुगन्धित वायु चलती है। वसन्त ऋतु को ऋतुराज भी कहा जाता है। वसन्त पंचमी के शुभ पर्व पर प्रकृति सरसों के पीले फूलों का परिधान पहनकर मन को लुभाने लगती है। वसन्त ऋतु में रक्तसंचार तीव्र हो जाता है जिससे शरीर में स्फूर्ति रहती है।

वसन्त ऋतु में न तो गर्मी की भीषण जलन-तपन होती है और न वर्षा की बाढ़ और न ही शिशिर की ठंडी हवा, हिमपात व कोहरा होता है। इन्हीं कारणों से वसन्त ऋतु को 'ऋतुराज' कहा गया है।

वसन्ते निचितः श्लेष्मा दिनकृभ्दाभिरीरितः।

चरक संहिता के अनुसार हेमन्त ऋतु में संचित हुआ कफ वसन्त ऋतु में सूर्य की किरणों से प्रेरित (द्रवीभूत) होकर कुपित होता है जिससे वसन्तकाल में खाँसी, सर्दी-जुकाम, टॉन्सिल्स में सूजन, गले में खराश, शरीर में सुस्ती व भारीपन आदि की शिकायत होने की सम्भावना रहती है। जठराग्नि मन्द हो जाती है अतः इस ऋतु में आहार-विहार के प्रति सावधान रहो।

वसन्त ऋतु में आहार-विहार

इस ऋतु में कफ को कुपित करनेवाले, पौष्टिक और गरिष्ठ पदार्थों की मात्रा धीरे-धीरे कम करते हुए गर्मी बढ़ते ही बन्द कर सादा सुपाच्य आहार लेना शुरू कर देना चाहिये। चरक के अनुसार इस ऋतु में भारी, चिकनाई वाले, खट्टे और मीठे पदार्थों का सेवन व दिन में सोना वर्जित है। इस ऋतु में कटु, तिक्त, कषायरस-प्रधान द्रव्यों का सेवन करना हितकारी है। प्रातः वायुसेवन के लिये घूमते समय १५-२० नीम की नई कोंपलें चबा-चबाकर खायें। इस प्रयोग से वर्ष भर चर्मरोग, रक्तविकार और ज्वर आदि रोगों से रक्षा करने की प्रतिरोधक शक्ति पैदा होती है।

यदि वसन्त ऋतु में आहार-विहार के उचित पालन पर पूरा ध्यान दिया जाय और बदपरहेजी न की जाय तो वर्त्तमानकाल में स्वास्थ्य की रक्षा होती है। साथ ही ग्रीष्म व वर्षा ऋतु में स्वास्थ्य की रक्षा करने की सुविधा हो जाती है। प्रत्येक ऋतु में स्वास्थ्य की दृष्टि से यदि आहार का महत्त्व है तो विहार भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

इस ऋतु में उबटन लगाना, तैल मालिश, धूप का सेवन, हल्के गर्म पानी से स्नान, योगासन व हल्का व्यायाम करना चाहिये। देर रात तक जागने और सुबह देर तक सोने से मल सूखता है, आँख व चेहरे की कान्ति क्षीण होती है अतः इस ऋतु में देर रात तक जागना, सुबह देर तक सोना स्वास्थ्य के लिये हानिप्रद है। हरड़े के चूर्ण का नियमित सेवन करनेवाले इस ऋतु में थोड़े से शहद में यह चूर्ण मिलाकर चाटें।

आयुर्वैदिक योग

शरीर-पुष्टि : एक गिलास पानी में एक नींबू का रस निचोड़कर उसमें दो किशमिश रात्रि में भिगो दें। सुबह स्नानादि के बाद छानकर पानी पी जाएँ व किशमिश चबा जाएँ। यह एक अद्‌भुत शक्तिवर्धक

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

...और दर्शनमात्र से पीड़ा हर ली

दिनांक : २४-१२-९६ को मेरी ११ वीं पूनम निमित्त पूज्यश्री के दर्शन हेतु सूरत आश्रम में आया था । उस दिन पूरा दिवस ध्यान शिविर में व्यतीत हुआ किन्तु शाम ७ बजे से कमर के नीचले हिस्से में असह्य पीड़ा होने लगी । करीबन २ घंटे पीड़ा सहता रहा । मेरे सब साथी सूरत आश्रम द्वारा बनवाये गये निवासस्थान वृन्दावन में चले गये थे ।

जब पीड़ा अति असह्य हुई तो पू. लीलाशाहजी उपचार केन्द्र में वैद्य अमृतभाई को बताया । उन्होंने ॲक्यूप्रेशर का उपचार करने को एवं एक ऑईल मालीस करनेको कहा, किन्तु ॲक्यूप्रेशर बंद हो चुका था और मालीस की दवा का भी उपयोग नहीं कर सकता था ।

पीड़ा इतनी बढ़ी कि मुझे एक फीट भी चलना मुश्किल हो रहा था । लगता था, किसी भी समय प्राण जा सकते हैं क्योंकि पीड़ा का प्रभाव गुप्तांगों में प्रवेश कर चुका था । साथी भी कोई पास में नहीं था । सब निवासस्थान वृन्दावन में पहुँच गये थे । मैं पू. लीलाशाह उपचार केन्द्र के पासवाले स्टॉल के बगल में बैठ गया । २ कि. मी. कैसे जाऊँ, जबकि एक फीट भी चलना मुश्किल था ? क्या करूँ ?

मैंने पूज्यश्री से मन-ही-मन करुणाभरी प्रार्थना की । मैं प्रार्थना ही कर रहा था कि अचानक किसीने पुकारा : 'बापू आये... बापू आये...' मैं चौंका ! देखा कि श्वेत वस्त्रधारी मेरे पूज्यश्री मेरे सामने से पधार रहे हैं । मैंने दु:खभरे नेत्रों से उनके दर्शन किये । तनिक पूज्यश्री ने मुझे निहारा । ऐसा प्रतीत हो रहा था कि पूज्यश्री अपने नेत्रों से कुछ प्रकाश-किरणें मेरे शरीर में डाल रहे हैं । उस समय यह असह्य पीड़ा न जाने कहाँ चली गयी थी ! मैं सुखद होकर पूज्यश्री के दर्शन करता रहा । मानो ऐसा प्रतीत हो रहा था कि गुरुवर मेरी करुणा-पुकार सुनकर कुछ निमित्त बनाकर आये हों । जबकि कल्पना भी नहीं थी कि पूज्यश्री इस समय मैं जहाँ बैठा था वहाँ आश्चर्यमय रूप से उपस्थित होकर मेरी पीड़ा हर लेंगे ।

फिर मैंने देखा कि पूज्यश्री गाड़ी में बैठकर बाहर गये । जब वे ओझल हुए तो पता भी न चला कि मुझे जो असह्य पीड़ा थी, वह कहाँ गई । पश्चात् गुरुमंदिर में ठहरे मेरे एक साथी आये । उन्होंने मुझे वहीं सुलाया । वहीं आराम पाया ।

सचमुच गुरुदेव की कृपादृष्टि मात्र से ही हमारी सारी पीड़ाएँ स्वत: गायब हो जाती हैं । अब तो पूज्यश्री से इतनी ही प्रार्थना है कि हमें जन्म-मरण की पीड़ा से छुटकारा मिल जाए...

मेरे पूज्यश्री ने मेरी रक्षा करके मुझे बचाया है । हे गुरुवर तुम्हारी जय हो !

- देवराम राठोड़
जिला परिषद, जलगाँव (महा.).

❀

उपहार योजना का लाभ लें

अपने परिचित एवं अन्य लोगों तक पूज्यश्री के सत्संग एवं मार्गदर्शन का लाभ 'ऋषि प्रसाद' द्वारा पहुँचाने हेतु सभी सेवाधारी भाइयों को इस माह से उनके द्वारा बनाये गये १० वार्षिक सदस्यों पर अथवा १ आजीवन सदस्य पर १ वार्षिक सदस्यता उपहार दी जायेगी ।

पूर्व में घोषित अन्य सभी उपहार योजनाएँ इस माह से निरस्त की जाती हैं ।

'ऋषि प्रसाद' की यशस्वी यात्रा

संतों की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से नन्हा-सा लगनेवाला कार्य भी कितना विशाल हो जाता है इसका उदाहरण है 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका । आज से ठीक ६ वर्ष ८ माह पूर्व सन् १९९० की गुरुपूर्णिमा के पावन अवसर पर जब पूज्य बापू के करकमलों द्वारा 'ऋषि प्रसाद' द्विमासिक के प्रथम अंक का विमोचन हुआ तब यह कल्पना भी नहीं थी कि इतने थोड़े समय में ही यह पत्रिका इस तरह विकास करेगी । उस समय सिर्फ गुजराती भाषा में ही कुल पच्चीस हजार अंक प्रकाशित हुए थे ।

जनसमाज में ज्ञानरूपी प्रकाश फैलाने तथा सुखी जीवन के लिये उसे ईश्वराभिमुख करने का उद्देश्य तथा पूज्य बापू की सहज सरल भाषा में वेदान्त प्रतिपादन की शैली के साथ ही जीवन के विभिन्न स्तरों में उपयोगी सामग्री देखकर देशभर के हिन्दी भाषी लोगों में, विशेषकर साधकों में उसकी चाहना बनी । उनकी लगातार माँग देखकर एक वर्ष में ही अर्थात् १९९१ की गुरुपूर्णिमा से गुजराती के साथ-साथ हिन्दी में भी प्रकाशन प्रारंभ हुआ । तब दोनों भाषा में मिलाकर ८०,००० अंक प्रकाशित हुए । पत्रिका की लोकप्रियता व उसका आकर्षक कलेवर तथा उपयोगिता को देखते हुए पाठकों को दो माह का अन्तर अधिक लगता था । इससे यह माँग बढ़ती गई कि 'ऋषि प्रसाद' को मासिक किया जाय । तब लगभग ५ वर्ष बाद ३२ वें अंक से, जबकि उसकी प्रतियाँ १,५०,००० छपती थीं, उसे मासिक कर दिया गया । ...और अब सुवर्ण जयन्ती अंक (५० वाँ अंक) आते-आते अर्थात् सिर्फ १६ माह में ही 'ऋषि प्रसाद' आज ४,००,००० से अधिक प्रतियों में छपकर सारे देश व विदेशों में भी २५ लाख से अधिक पाठकों को धर्म, संस्कृति एवं चरित्र-निर्माण की प्रेरणा देते हुए पूज्य बापू का संदेश जन-जन तक पहुँचा रहा है ।

इस सारे उपक्रम में 'ऋषि प्रसाद' के सेवाधारी स्वयंसेवकों का योगदान विशेष उल्लेखनीय है जिनके अथक प्रयास एवं उत्साह के फलस्वरूप ही 'ऋषि प्रसाद' एक नन्हे पौधे से विशाल वटवृक्ष के रूप में फैल रहा है । देश की विभिन्न भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी में भी 'ऋषि प्रसाद' छपे ऐसी माँग विभिन्न क्षेत्रों से आ रही है जो समय आने पर फलीभूत होगी ही । 'ऋषि प्रसाद' के सदस्यों-पाठकों एवं सेवाधारी स्वयंसेवकों को सुवर्ण जयन्ती अंक-प्रकाशन के अवसर पर शुभकामनाएँ....

(संपादकीय)

सुवर्ण जयन्ती अंक-प्रकाशन के प्रसंग पर महानुभावों के संदेश

राष्ट्रपति का उप प्रेस सचिव
Deputy Press Secretary to the President

राष्ट्रपति सचिवालय,
राष्ट्रपति भवन, नई दिल्ली-११०००४
President's Secretarial,
Rashtrapati Bhavan, New Delhi-110004

राष्ट्रपतिजी को यह जानकर प्रसन्नता हुई कि संत श्री आसाराम आश्रम द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'ऋषि प्रसाद' का ५० वाँ अंक प्रकाशित होने जा रहा है ।

राष्ट्रपति जी इस हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं ।

नई दिल्ली
१ फरवरी, १९९७

(हस्ताक्षर)
ए. पी. फैंक नरोन्हा

Krishna Pal Singh
Governor of Gujarat

RAJ BHAVAN
GANDHINAGAR-382 020

સં દે શ

સંત શ્રી આશારામજી આશ્રમ ધ્વારા પ્રકાશિત 'ઋષિપ્રસાદ' સામયિકનો ૫૦મો અંક પ્રગટ કરાઈ રહયો છે તે જાણીને આનંદ થયો.

સામયિક વિવિધતામાં એકતાની ઝાંખી કરાવતી આપણી વૈવિધ્યપૂર્ણ ભારતીય સંસ્કૃતિના પ્રચાર- પ્રસાર તથા દેશની એકતા અખંડિતતાના જતન કાજે સર્વધર્મ સમભાવની ભાવનાને બળવ-તર બનાવવામાં નોંધપાત્ર યોગદાન આપી શકશે એવી શ્રધ્ધા સાથે 'ઋષિપ્રસાદ' ના ૫૦મા અંકના પ્રકાશનને સંપૂર્ણ સફળતા ઇચ્છું છું.

(કૃષ્ણપાલ સિંહ)

गुजरात के मा. राज्यपालश्री का संदेश

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका का ५० वाँ अंक प्रकाशित किया जा रहा है यह जानकर आनंद हुआ ।

यह पत्रिका विभिन्नता में एकता की झलक दिखानेवाली हमारी वैविध्यपूर्ण भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार एवं देश की एकता-अखंडितता की सुरक्षा हेतु सर्वधर्म समभाव की भावना को प्रबल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकेगी इसी श्रद्धा के साथ 'ऋषि प्रसाद' के ५० वें अंक के प्रकाशन को संपूर्ण सफलता की शुभकामना करता हूँ ।

(हस्ताक्षर)
कृष्णपाल सिंह
Governor of Gujarat
Raj Bhavan,
Gandhinagar-382020

मुख्यमंत्रीश्री (गुज.) का संदेश

आदरणीय संत पूज्य आशारामजी बापू के मार्गदर्शन में प्रकाशित होनेवाली 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका का 'सुवर्ण जयंती' अंक प्रकाशित हो रहा है यह जानकर मुझे आनंद हुआ ।

धर्म, संस्कृति, राष्ट्र की सुरक्षा एवं सनातन हिन्दू धर्म के उत्थान विषयक प्रेरक वाचन सामग्री द्वारा भारतीय संस्कृति के प्रसार के लिये समर्पित यह प्रकाशन देश की एकता एवं अखंडितता के लिये भी उपयोगी बनी रहेगी इस श्रद्धा के साथ इस विशेषांक के प्रकाशन की सफलता के लिये हार्दिक शुभकामनाएँ करता हूँ ।

(हस्ताक्षर)
शंकरसिंहजी वाघेला
मुख्यमंत्री, गुजरात राज्य ।
सचिवालय, गांधीनगर-३८२०१०
दिनांक : ३१-१-९७

શંકરસિંહ વાઘેલા
મુખ્ય મંત્રી

ગુજરાત રાજ્ય

બ્લોક નં. ૧, ૫મો માળ, સચિવાલય
ગાંધીનગર-૩૮૨ ૦૧૦ ગુજરાત
ફોન : (ક) ૨૦૧૩૪, ૨૦૩૯૫, ૬૬૩૧
ફેક્સ નં. ૨૨૧૦૧

તા. ૩૧-૧-૯૭

સંદેશો :-

આદરણીયા સંત પૂજ્ય આશારામજી બાપુના માર્ગદર્શન હેઠળ પ્રકાશિત થતી " રુષિ પ્રસાદ " પ્રવિકાનો " સુવર્ણ જયંતી " અંક પ્રકાશિત થઈ રહયો છે એ જાણી મને આનંદ થયો.

ધર્મ, સંસ્કૃતિ, રાષ્ટ્રની સુરક્ષા અને સનાતન હિન્દુ ધર્મના ઉત્થાનને લગતી પ્રેરક વાચન સામગ્રી ધ્વારા ભારતીય સંસ્કૃતિના પ્રસાર માટે સમર્પિત આ પ્રકાશન દેશની એકતા અને અખંડિતતા માટે પણ ઉપયોગી બની રહેશે એવી શ્રધ્ધા સાથે આ વિશેષાંકના પ્રકાશનની સફળતા માટે હાર્દિક શુભેચ્છાઓ પાઠવું છું.

: શંકરસિંહજી વાઘેલા

કેશુભાઈ પટેલ
માજી મુખ્ય મંત્રી

ફોન : ૩૧ ૦ ૪૪ - ૨૯ ૩ ૮૫
કે - ૧૧, સેક્ટર - ૧૯.
ગાંધીનગર - ૩૮૨ ૦૧૯.
તારીખ : ૩૧/૧/૧૯૯૭.

સ્નેહીશ્રી,

વિશ્વમાં ભારતના ગૌરવ પુરુષ પૂ. સંતશ્રી આશારામજી બાપુના આશ્રમ ધ્વારા પ્રકાશિત ''ઋષિ પ્રસાદ'' માસિક પત્રિકા ફકત સાતજ વર્ષમાં ૪ લાખ જેટલી નકલો અને ૨૫ લાખ જેટલા વાંચકો સુધી પહોંચી છે. જે પૂ. આશારામજી બાપુની પ્રેરણા અને આશીર્વાદનું ફળ છે.

આ પત્રિકા લોકોને ચારિત્ર્ય, રાષ્ટ્રભકિત અને નૈતિકતાની પ્રેરણા આપવાનું મહત્વનું કાર્ય કરે છે. ઋષિ પ્રસાદ પત્રિકાના સુવર્ણજયંતિ અંક પ્રસંગે તેના ઉજ્જવળ ભવિષ્ય માટે મારીશુભકામનાઓ પાઠવું છું.

આપનો સ્નેહાધિન,
કે. શ્રી. પટેલ
(કેશુભાઈ પટેલ)

भूतपूर्व मुख्यमंत्री (गुज.) का संदेश

स्नेहीश्री,

विश्व में भारत के गौरवरूप पुरुष पू. संत श्री आशारामजी बापू के आश्रम द्वारा प्रकाशित 'ऋषि प्रसाद' मासिक पत्रिका केवल सात ही वर्षों में करीब ४ लाख प्रतियाँ एवं करीब २५ लाख पाठकों तक पहुँची है जो पू. आशारामजी बापू की प्रेरणा एवं आशीर्वाद का फल है ।

यह पत्रिका लोगों को चारित्र्य, राष्ट्रभक्ति एवं नैतिकता की प्रेरणा देने का महत्त्वपूर्ण कार्य करती है । 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका के सुवर्ण जयंती अंक-प्रकाशन के प्रसंग पर उसके उज्ज्वल भविष्य के लिये मैं शुभकामनाएँ करता हूँ ।

आपका स्नेहाधीन,
(हस्ताक्षर)
केशुभाई पटेल
भूतपूर्व मुख्यमंत्री (गुजरात राज्य)
गांधीनगर-३८२०१९.
दिनांक : ३१-१-१९९७

पंचायत मंत्रीश्री (गुज.) का संदेश

आदरणीय संतश्री पूज्य आशारामजी बापू के मार्गदर्शन में प्रकाशित 'ऋषि प्रसाद' पत्रिका का 'सुवर्ण जयंती अंक' प्रकाशित हो रहा है यह जानकर आनंद हुआ ।

विश्ववंदनीय पूज्यपाद संत श्री आशारामजी बापू एक आध्यात्मिक विभूति हैं । उनके करुणामय आशीर्वाद के साथ 'ऋषि प्रसाद' नामक पत्रिका जो देश-विदेश में सनातन धर्म एवं आदर्श भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार में संलग्न है, का 'सुवर्ण जयंती अंक' प्रकाशित हो रहा है । उसमें धर्म, संस्कृति, राष्ट्र की सुरक्षा, एवं सनातन हिन्दू धर्म के उत्थान विषयक विवेचन से मुझे बहुत प्रसन्नता हुई है । मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका देश की एकता एवं अखंडितता के लिये उपयोगी सिद्ध होगी ही । इस पत्रिका का प्रचार-प्रसार सारे विश्व में हो ऐसी शुभकामनाएँ करता हूँ ।

(हस्ताक्षर)
माधुभाई ठाकोर
मंत्रीश्री, पंचायत, सामाजिक-शैक्षणिक पछात वर्ग कल्याण, गुजरात सरकार ।
सचिवालय, गांधीनगर ।
दिनांक : ३१-१-१९९७

માધુભાઈ ઠાકોર

ક્રમાંક : મં./
મંત્રીશ્રી, પંચાયત, સામાજિક અને શૈક્ષણિક રીતે પછાત વર્ગોનું કલ્યાણ
ગુજરાત સરકાર
બ્લોક નં. ૧, ૬ઠો માળ,
સરદાર પટેલ ભવન, સચિવાલય
ગાંધીનગર- ૩૮૨ ૦૧૦
ફોન : ૨૦૦૬૨, ૬૪૪૩ (ઓ)
તા. ૩૧-૧-૧૯૯૭.

સં દે શો

આદરણીય સંતશ્રી પૂજય આશારામજી બાપુના માર્ગદર્શન હેઠળ પ્રકાશિત થતી **"ઋષિ પ્રસાદ"** પ્રત્રિકાનો "સુવર્ણ જયંતિ"અંક પ્રકાશિત થઈ રહ્યો છે, એ જાણી આનંદ થયો.

વિશ્વ વંદનીય પૂજયપાદ સંતશ્રી આશારામજી બાપુ કે જે એક આધ્યાત્મિક વિભુતી છે. તેમના કરૂણામય આશિર્વાદ સાથે **"ઋષિ પ્રસાદ"** નામની પ્રત્રિકા કે જે દેશ-વિદેશમાં સનાતન ધર્મ તથા આદર્શ ભારતીય સંસ્કૃતિના પ્રચાર પ્રસાર લાગેલ છે. તેમાં આ **"સુવર્ણ જયંતિ"**અંકનું પ્રસારણ થઈ રહેલ છે. તેમાં ધર્મ, સંસ્કૃતિ, રાષ્ટ્રની સુરક્ષા તથા સનાતન હિન્દુ ધર્મના ઉત્થાન પરના વિવેચનથી મને ગણી પ્રસન્નતા થઈ છે. મને વિશ્વાસ છે કે આ પત્રિકા દેશની એક્તા અખંડિતતા માટે ઉપયોગી નિવડશે જ. આ પત્રિકાનો પ્રચાર-પ્રસાર સમગ્ર વિશ્વમાં થાય તેવી શુભ કામનાઓ આ સાથે પાઠવુ છું.

(માધુભાઈ ઠાકોર)

संस्था-समाचार

बड़ौदा : संस्कारनगरी बड़ौदा (गुजरात) के पोलो मैदान में दिनांक : १८ से २२ दिसम्बर ९६ तक आयोजित अविस्मरणीय सत्संग समारोह के प्रथम दिन ही पूज्यश्री की सत्संग-सरिता में स्नान करने के लिये, पूज्यश्री के पधारने से पूर्व ही आस-पास के ग्राम-विस्तारों, जिलों, प्रांतों से आये भक्तजन सत्संग मंडप में स्थान ग्रहण कर चुके थे ।

सत्संग पांडाल में पूज्य बापूजी के प्रवेश करने पर, सिर पर कलश रखे हुए लगभग २५० कुमारिकाओं ने स्वागत किया ।

व्यासपीठ पर पूज्यश्री के पहुँचने पर शहर के प्रथम नागरिक मेयर श्री शब्दशरण ब्रह्मभट्ट, राजघराने के संग्रामसिंह गायकवाड़ व धर्मपत्नी श्रीमती आशाराजे गायकवाड़, सांसद श्री सत्यजीतसिंह गायकवाड़, भूतपूर्व मेयर श्री दलसुख प्रजापति, भाजपा शहर प्रमुख श्री जितेन्द्र सुखड़िया व शहर के प्रतिष्ठित नागरिकों ने पुष्पमालाओं से पूज्य बापू का स्वागत किया ।

स्वागत प्रवचन में मेयर श्री ब्रह्मभट्ट ने कहा : *"आज एक ओर भारतीय युवान भारतीय संस्कृति की गरिमा को भूलकर पश्चिमी संस्कृति के अँधे अनुकरण से दिशाशून्य बन रहे हैं, वहीं भारतीय संस्कृति के पुनरुत्थान के लिये व देश की भावी पीढ़ी के सही मार्गदर्शन के लिये पूज्य बापूजी की अमृतवाणी से नवीन प्रेरणाएँ मिल रही हैं इसमें कोई शंका नहीं है ।"*

इसी विचार के समर्थन में अखिल भारतीय युवा काँग्रेस के प्रमुख व युवा सांसद श्री सत्यजीतसिंह गायकवाड़ ने कहा : *"आज के युवानों को पूज्यश्री के सत्संग से सही दिशा मिल रही है ।"*

प्रथम दिन ही डेढ़ से दो लाख भाविक भक्तों ने पूज्यश्री की अमृतवाणी का लाभ लिया । विश्ववंदनीय संत पूज्यश्री ने अपनी अनुभवसंपन्न वाणी से श्रद्धालुओं को मंत्रमुग्ध करते हुए कहा : *"धनी-निर्धन, नेता-अभिनेता, सुखी-दुःखी, लोभी-त्यागी या साधु-संन्यासी बन जाने से ईश्वरप्राप्ति नहीं होती अपितु ईश्वरमय बनने से ही ईश्वरप्राप्ति होती है ।"*

दिनांक : २० दिसम्बर को गुजरात राज्य के मेहसूल मंत्री श्री आत्मारामभाई पटेल ने पुष्पमालाओं से बनी चादर ओढ़ाकर लोकसंत पूज्य बापूजी को गुजरात की जनता के प्रतिनिधि की तरह अभिवादन किया । उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा : *"जब तक मेरा शरीर रहे तब तक मेरी मति शुद्ध रहे और हमेशा ऐसे ब्रह्मनिष्ठ संतों का सान्निध्य मिलता रहे ।"*

आज सुबह के सत्संग की पूर्णाहुति के बाद केन्द्रीय कारागार का वातावरण पूज्य बापूजी की उपस्थिति व 'हरि ॐ...' के पवित्र उच्चारण से हरिमय बन गया था । कारागार के १५०० कैदियों को अपनी कर्णप्रिय वाणी में अवगाहन कराते हुए पू. बापूजी ने कहा : *"तीन प्रकार की जेल होती है : पहली माता की गर्भरूपी जेल, जिसमें आप-हम सभी होकर आये हैं । दूसरी होती है नरकरूपी जेल और तीसरी है यह सामाजिक जेल ।"* पूज्यश्री ने कहा : *"आपको उस नरकरूपी जेल में न जाना पड़े अतः यहीं पर आपके कर्म कट रहे हैं । अब बीती बातों को याद करके राग-द्वेष उत्पन्न न करें अपितु आत्मकल्याण के लिये, मुक्ति के लिये भगवन्नाम जप, ध्यान, स्मरण करें ।"*

दिनांक : २१ दिसम्बर को विद्यार्थियों के लिये विशेष सत्र का आयोजन किया गया जिसमें शहर की विभिन्न प्राथमिक-माध्यमिक शालाओं तथा महाविद्यालयों के लगभग २० हजार छात्र-छात्राओं ने संतवाणी का लाभ लिया ।

राष्ट्रसंत पू. बापू ने विद्यार्थियों को संबोधन करते हुए कहा : *"शरीर स्वस्थ रखने के लिये सुबह जल्दी उठकर दौड़ना, तैरना, सूर्यनमस्कार, व्यायाम आदि करना चाहिये व मन-बुद्धि को दिव्य बनाने के लिये भगवत्स्मरण करना चाहिये । जीवन में उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति, पराक्रम इन छः गुणों को अपनाना चाहिये । साथ ही शरीर की जीवनशक्ति के विकास के लिये ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिये ।"*

आज भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष तथा गुजरात राज्य के भूतपूर्व मुख्यमंत्री श्री केशुभाई पटेल, भाजपा के धारासभ्य श्री योगेश पटेल, धारासभ्य श्री भूपेन्द्र लाखावाणा, भूतपूर्व सांसद श्री रणजीतसिंह गायकवाड़ व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती शुभांगिनी राजे गायकवाड़ तथा भूतपूर्व शिक्षामंत्री श्री नलिन भट्ट, भूतपूर्व मंत्री श्री जशवंतलाल शाह, जिला

बड़ौदा के भव्य सत्संग समारोह में पूज्यश्री से दिव्य प्रेरणा प्राप्त करते हुए
राजघराने के रणजीतसिंह गायकवाड़ व धर्मपत्नी शुभांगिनी देवी ।

बड़ौदा में आयोजित अविस्मरणी[illegible] समारोह में आत्मानुभव को छुकर
आनेवाली पूज्यश्री की दिव्य वाणी का[illegible]पान करतें हुए ४-४ लाख श्रद्धालुजन।

REGISTERED WITH R.N.I. UNDER NO. 48873/91 LICENSED TO POST W O PRE PAYMENT AHMEDABAD PSO LICENCE NO. 207 REGD. NO. GAMC 1132 BOMBAY BYCULLA PSO LICENCE NO. 1 REGD NO MH/MNW-01